THE WORLD BANK

SCERT पटना द्वारा विकसित एक मासिक पत्र

e-संवाद

June 2019 Vol. 02 No. 1

विषय सूची

1. निदेशक की कलम से
2. अपनी बात
3. पहली कक्षा का शिक्षक
4. विद्यालय शिक्षा समिति
5. नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009
6. केस स्टडी
7. DIET के शिक्षकों के लिए एक संसाधन केंद्र की कहानी, सेरछिप, मिज़ोरम
8. गाँधी कथा वाचन
9. रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनमोल विचार
10. एक शिक्षक के प्रयोग...
11. सावित्री बाई फुले - देश की पहली महिला टीचर
12. तोत्तो-चान क्यों पढ़ें?
13. ड्राफ्ट एनईपी के कुछ प्रमुख बिंदु
14. वर्ग-कक्ष में अवधारणा आधारित गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन
15. बाल संसद गाथा
16. पेड़ पौधों की दुनियां
17. विश्व की महत्वपूर्ण तिथियां/दिवस

परामर्श दाता

विनोद कुमार सिंह (भा0प्र0से0)
निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, पटना
विनय पटनायक, टीम लीडर,
आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0

संपादक मंडल
डा0 इम्तयाज आलम
विभागाध्यक्ष, दृश्य श्रव्य विभाग,
एस0सी0ई0आर0टी0
तेजनारायण प्रसाद
विभागाध्यक्ष, गणित विज्ञान विभाग,
एस0सी0ई0आर0टी0
नलिन कुमार मिश्रा
सी0पी0डी0 लीड,
आई0एस0ए–एस0सी0ई0आर0टी0

ग्राफिक्स डिजायन
सव्यसाची पांजा
आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0

निदेशक की कलम से - शुभेच्छा

प्रिय पाठकों,

मुझे हर्ष है कि एस0 सी0 ई0 आर0 टी0 से प्रत्येक माह e संवाद आप तक प्रेषित की जा रही है। यह दूसरे वर्ष का प्रथम अंक है।

संवाद करना हमें हमारे ज्ञान को प्रखर बनाने में सहयोग करता है। हम सभी सीखने सिखाने के काम में लगे हुए है। हम आपस में जितना संवाद करेंगें, उतना एक दूसरे से सीखेंगें।

पत्रिका के माध्यम से संवाद के विषय आपतक प्रेषित करने की कोशिश की जाती है। आप अपने शिक्षक, छात्र शिक्षक के साथ इन विषयों पर संवाद करें। अपने किए संवाद से हमें भी अवगत कराएँ। आप अपने विद्यालयों, शिक्षण संस्थानों में बेहतर कार्य कर रहे है। उन्हीं कार्यों में कुछ कार्यों को हमसे भी साझा करें ताकि आपके कार्यों को और लोगों से साझा किया जा सके। आपके कार्यों से वे सीख सकें।
आप सबों को बहुत बहुत धन्यवाद और बधाई।

आपका

विनोद कुमार सिंह
निदेशक, एस0 सी0 ई0 आर0 टी0, पटना

अपनी बात

प्रिय शिक्षक साथियों,

e संवाद के दूसरे वर्ष के प्रथम अंक आपको प्रेषित करते हुए काफी खुशी हो रही है। आप सबों ने इस प्रयास को मुक्त कंठ से सराहा है। आपने अपने विचारों से इसे बेहतर करने में हमारी मदद की है। आपके इस कार्य के लिए हम आपके आभारी है।

इस अंक से e संवाद को विस्तार देने की कोशिश की है। आपको इसके माध्यम से देश में चल रहे गतिविधियों से भी परिचय कराया जाए। नीति नियम क्या कहते है,उससे भी आप परिचित हो सकें। अपने राज्य में हो रहे नवाचार से आप अवगत हों। साथ ही शिक्षा में किए गए या जा रहे प्रयोगों से आप भिज्ञ हों। शैक्षिक प्रयोगों पर आधारित पुस्तक भी आप तक प्रेषित करने की कोशिश की गई है। विषय गत शिक्षण में सहयोग मिले को ध्यान में रखकर भाषा और गणित की कुछ गतिविधियों को भी शामिल किया गया है। इस अंक में श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन के साथ साथ सावित्री बाई फूले के प्रयासों को भी रखा है।

अभी भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति के ड्राफ्ट अंक प्रकाशित किया है। इसे भी आपके अवलोकन एवं आपके विचार हेतु शामिल किया जा रहा है। आप सीधे लिंक पर अपने विचार दे सकते है। हमें भी अपने विचार से अवगत करा सकते है।

आशा है यह अंक आपको पिछले अंको से ज्यादा लाभदायी लगे। आप अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराएँ।

एक बार पुनः आपका धन्यवाद।

पहली कक्षा का शिक्षक

माँ की गोदी से निकलकर बच्चा जब पहली बार स्कूली जीवन में कदम रखता है, तो उसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ आ खड़ी होती हैं। नए–नए लोगों से सामंजस्य स्थापित करना, नए परिवेश में स्वयं को ढालना आदि। वहीं पहली कक्षा के शिक्षक के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। स्कूली दुनिया में पहली बार कदम रखने वाले बच्चे को स्कूल में बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। लेकिन शिक्षक कुछ बातों के प्रति सजग रहे तो इन सभी चुनौतियों का सामना कर सकता है।

पहली कक्षा ही वह कक्षा है जिसमें अधिकतर बच्चे स्कूली दुनिया में पहला कदम रखते हैं। और पहली कक्षा ही वह कक्षा है जो अधिकतर बच्चों का किताबों की दुनिया से परिचय कराती है। यही वह कक्षा है जो बच्चों के मन में पढ़ाई–लिखाई, किताबों, स्कूल और शिक्षकों के प्रति एक नजरिया विकसित करती है। यह नजरिया अगर सकारात्मक होता है तो पढ़ने की दहलीज पर कदम रखने वाला बच्चा स्कूली दुनिया में प्रविष्ट होकर सफलता की सीढ़ियाँ लांघता चला जाता है। इसके विपरीत स्कूल के प्रति बच्चे का रवैया यदि पहली कक्षा में नकारात्मक बन जाता है तो बच्चे को शाला त्यागते देर नहीं लगती और कई बार तो पहली कक्षा ही आखिरी कक्षा बनकर रह जाती है।

घर की बोली को कक्षा में स्थान

बच्चे को स्कूल में बनाए रखने में शिक्षक की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रहती है। पहली कक्षा के शिक्षक की जिम्मेदारी अन्य कक्षाओं के शिक्षकों के मुकाबले काफी चुनौतीपूर्ण है। माँ की ममतामयी गोद से निकलकर विद्यालय में कदम रखने वाले इन नन्हे–मुन्नों को परिवार के सदस्यों का सा स्नेह देना, उसके साथ घुल–मिल जाना पहली चुनौती है। अकसर बच्चे जब अपने घर की बोली में कक्षा में कोई बात कहते हैं तो शिक्षक द्वारा उसे तुरंत टोक दिया जाता है।भाषा की कक्षा में तो शिक्षक इस बात पर विशेष रूप से जोर देता है कि बच्चे मानक भाषा का व्यवहार करें। मानक भाषा तो बच्चे धीरे–धीरे सीख ही लेंगे पर पहली कक्षा में बच्चे पर मानक भाषा में ही बात करने के दवाब का दुष्परिणाम यह होता है कि बड़े ही उत्साह से अपनी बात कहने को तत्पर बच्चे चुप हो जाते हैं। मानक भाषा में बात करने में असमर्थ बच्चे का आत्मविश्वास लड़खड़ा जाता है। लड़खड़ाते आत्मविश्वास वाले बच्चे फिर कभी मुखर होने का साहस नहीं जुटा पाते। हमारी बहुभाषिक संस्कति हमारी पहचान है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की सिफारिश करती है। बच्चे की घर की बोली को सम्मान देकर ही बच्चे के आत्मसम्मान को बनाए रखा जा सकता है। पहली कक्षा का शिक्षक बच्चे को अपने शब्दों, अपनी बोली में बोलने का अवसर देकर अत्यंत सहजता से उसके मन को भी स्पर्श कर सकता है।

पूर्वाग्रहों से मुक्त शिक्षक

कई बार पूर्वाग्रहों से युक्त होने के कारण शिक्षक अनजाने में बच्चे के साथ नांइसाफी कर जाते हैं। शिक्षक का पक्षपातपूर्ण रवैया बच्चे को स्कूल से विमुख कर देता है। इसलिए उसे जाति, धर्म, वर्ग आदि के किसी भी पूर्वग्रह से स्वयं को मुक्त रखते हुए कक्षा के प्रत्येक बच्चे के करीब पहुँचना है।

प्यार, भरोसा और आत्मीयता

शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की, चाहे वह किसी धर्म–जाति, वर्ग का हो, क्षमता पर भरोसा जताना है। हर बच्चे को विश्वास दिलाना है कि हाँ, मैं सीख सकता हूँ, मैं पढ़–लिख सकती हूँ। बच्चे के सिर पर रखा शिक्षक का प्यार भरा हाथ उसे भरोसा दिलाएगा कि हाँ, मेरे शिक्षक मुझे प्यार करते हैं, मुझपर विश्वास करते है। शारीरिक/मानसिक चुनौती वाले बच्चे यदि कक्षा में हैं तो उन्हें भी हर गतिविधि में अन्य बच्चों के साथ सम्मिलित कर ही समेकित शिक्षा को सही मायनों में अर्थ दिया जा सकता है। ऐसे बच्चों के लिए कक्षा में बाकी बच्चों का दोस्त बनने के मौके पैदा करें ना कि सहानुभूति का पात्र। ऐसे बच्चों की मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था करने का हर संभव प्रयास करें।

कक्षा का वातावरण

कक्षा का वातावरण बच्चों के मनमुताबिक होगा तो बच्चों का मन लगेगा। शिक्षक के सामने एक बड़ी चुनौती है बच्चों के अनुकूल वातावरण निर्माण करने की। अकसर विद्यालय परिसर में तथा कक्षा के भीतर बड़े–बड़े सूक्ति वाक्य लिखे रहते हैं– विद्या ददाति विनयम्, अहिंसा परमों धर्मः आदि। इन वाक्यों का बच्चों की वास्तविक जिंदगी से कोई मतलब नहीं है। ऐसी लिखित सामग्री बच्चों को अपनी ओर नहीं खींचती।बच्चों की रूचि की मुद्रित सामग्री चारों ओर लगी रहेगी तो बच्चे उसे देखेंगे, अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश करेंगे और पढ़ने की दुनिया में कदम रखेंगे। सुंदर चित्र, कोई अच्छा–सा कार्टून, अच्छी–सी कविता, मजेदार–सा वाक्य कुछ भी हो सकता है। कोई भी चार्ट या मुद्रित सामग्री लगाते समय ध्यान रखें कि बच्चे उसे आसानी से देख और

पढ़ सकें। वह बच्चों की पहुँच के भीतर हो। मुद्रित सामग्री ही नहीं कक्षा में रखी किताबें, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, चॉक सब कुछ ऐसे स्थान में रखे हों जहाँ बच्चों का हाथ आसानी से पहुँच जाए।

कहानी का खजाना

बच्चों को कहानी सुनने, कविता गाने में बहुत आनंद आता है। पहली कक्षा के शिक्षक के पास बच्चों के मनपसंद विषयों की कहानियों,कविताओं का अच्छा–खासा जखीरा होना चाहिए। कितना अच्छा हो यदि प्रतिदिन कक्षा की शुरुआत रोचक किस्से–कहानी से हो। कहानी का आनंद बच्चों को दिनभर के लिए उमंग तथा उत्साह से लबालब कर देगा। कहानी का विषय बच्चों की पसंद का और उनके परिवेश से जुड़ा हो। भाषा बच्चों की अपनी हो और कहानी सुनाने का तरीका रोचक हो। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर कहानी सुनाएँ। प्रतिदिन एक कहानी न केवल बच्चे को विद्यालय की ओर आकर्षित करेगी बल्कि शिक्षक से उसका स्नेहिल नाता भी बड़ी सरलता से बन जाएगा। कहानी के बाद बच्चों से संवाद करें। विभिन्न भाषायी कौशल कहानी के माध्यम से बड़ी सहजता से बच्चों में विकसित किए जा सकते हैं। साथ ही बच्चों से भी कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

कविता का आनंद

लय, गति, तुक के कारण कविता बच्चे बहुत जल्दी याद कर लेते हैं और गाते हैं। बच्चों की रुचि के विषयों पर आधरित कविता सुनाएँ और बच्चों को साथ में दोहराने के लिए कहें। कविता की दो–चार पंक्तियाँ सुनाने के बाद बच्चों से उसे आगे बढ़ाने की गतिविधि करवाई जा सकती है जैसे –

पैसा पास होता
तो चार चने लाते
चार चने में से एक
कौवे को खिलाते
तो बड़ा मजा आता
बड़ा मजा आता
जब काँव–काँव चिल्लाता
पैसा पास होता
तो चार चने लाते
चार चने में से एक
मुर्गे को खिलाते
मुर्गे को खिलाते
तो बड़ा मजा आता
बड़ा मजा आता जब..
बच्चा अपने आप जोड़ देगा
कुकड़ूँ कूँ चिल्लाता।

समय–सारिणी में लचीलापन

कविता–कहानी सुनाने के दौरान इनका भरपूर आनंद बच्चों को लेने दें। अगर बच्चे कहानी पर चर्चा जारी रखना चाहते हैं तो ऐसा करने दें। इसका मतलब है कि उन्हें कहानी में रस मिला। यह सोचकर तुरंत गणित पढ़ाना न शुरू कर दें कि भाषा की घंटी खत्म हुई, अब गणित की घंटी में गणित ही पढ़ाना है। समय सारिणी में लचीलापन बरतना जरूरी है।

जरूरी है धीरज

नन्हे–मुन्ने जब पहली बार स्कूल जाते हैं तो कभी–कभी उनका मन नहीं लगता, रोना शुरू कर देते हैं, कक्षा में पढ़ाई में उनका ध्यान नहीं लगता, अपनी बात कहने में कुछ बच्चे काफी वक्त लगाते हैं, इन सबसे आसानी से वही शिक्षक पार पा सकता है जिसमें धीरज का गुण हो। बच्चों की बात को पूरी तन्मयता और धैर्य से सुनें। गतिविधि कराते समय आपने गोले में खड़े होने के लिए कहा और बच्चे आपके अनुसार बताए गोले में न खड़े होकर आड़े–तिरछे हों तो डाँटिए नहीं। नन्हें बच्चे धीरे–धीरे स्वतः सीख जाएँगे। बच्चे की बात सुनें, अपनी बात मनवाने का उतावलापन ठीक नहीं।

बच्चे की प्रतिभा की परख

हर बच्चे में कोई न कोई हुनर जरूर होता है। कई बच्चे ऐसे परिवारों से आते हैं जहाँ कई बार माता–पिता के पास इतना समय नहीं होता है कि वे बच्चों की प्रतिभा को पहचानें, तो कई बार अभिभावक के पास पारखी नजरिए का अभाव होता है। कक्षा में प्रत्येक बच्चे के हुनर की पहचान करने तथा विकसित करने की चुनौती का सामना भी शिक्षक को करना है।

जेंडर का मुद्दा

कक्षा में प्रत्येक बच्चे को चाहे वह लड़का हो या लड़की किसी–न–किसी गतिविधि में नेतृत्व का मौका जरूर दें। कार्य में अगुवाई करने से बच्चे में बचपन से ही निर्णय लेने तथा नेतृत्व की क्षमता का विकास होगा। कक्षा में प्रत्येक गतिविधि में लड़के–लड़की दोनों को समान अवसर दें। जेंडर का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है। कक्षा की व्यवस्था, कक्षा में दीवारों पर लगी सामग्री तथा शिक्षण के दौरान भी इस बात के प्रति सजग रहना होगा कि लड़के–लड़की दोनों के साथ समानता का व्यवहार हो रहा है, उन्हें समान गरिमा और अवसर दिए जा रहे हैं।

बच्चे की भागीदारी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता की संस्तुति करती है। वास्तव में सीखने के दौरान बच्चों की भागीदारी निरंतर बनी रहे तो सीखना बच्चों को नीरस और उबाउ नहीं लगता है बल्कि सीखने की प्रक्रिया उनके लिए आनंदमय बन जाती है और कुछ करते–करते वे कब सीख लेते हैं, उन्हें इसका भान भी नहीं होता है।

अनुशासन का बदलता पैमाना

अनुशासन के नाम पर बच्चों को हैंडस् डाउन, फिंगर ऑन योर लिप्स, हाथ बाँधकर चुपचाप बैठा देने से कक्षा में निष्क्रियता और बोझिलता पसर जाएगी। सक्रियता बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उन्हें स्वयं कुछ करने, बाहर जाकर पेड़–पौधों आदि का अवलोकन करने, आपस में बातचीत करने के अवसर देने से ही तो वे स्वयं ज्ञान की रचना कर पाएँगे। बच्चे सक्रिय रहेंगे तो कुछ न कुछ करेंगे, सीखेंगे। सीखने

की दशा में अनुशासनहीनता का तो सवाल ही नहीं उठता है। अनुशासन को मापने का पैमाना बदलना होगा।

प्रगति की जाँच

बच्चों की प्रगति की जाँच सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। पहली कक्षा में बच्चों की प्रगति की तुलना अन्य बच्चों से करने की भूल कदापि नहीं करें। इससे बच्चों में हीन भावना जन्म लेगी और वह हतोत्साहित हो जाएँगे बच्चों की प्रगति की जाँच उनकी पहले की प्रगति से तुलना करते हुए करें। जानने का प्रयास करें कि उन्होंने पहले से कुछ ज्यादा अच्छा किया है या वह पहले की तुलना में पिछड़ गए हैं। कहाँ पर सुधार की जरूरत है? अच्छा करने पर बच्चों की सराहना जरूर करें।

अच्छा न करने पर उन्हें डाँटे नहीं, बल्कि सहारा दें, आगे अच्छा करने को प्रोत्साहित करें। आपसे मिला सहारा ही आगे अच्छे प्रदर्शन के लिए उसका संबल बनेगा।

अभिभावकों से संवाद

पहली कक्षा के शिक्षक के लिए बहुत जरूरी है कि बच्चों के अभिभावकों से भी उसका संवाद लगातार बना रहे। गृह शिक्षक के रूप में अभिभावक की भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। बच्चों के संबंध में शिक्षक और गृह शिक्षक यानी अभिभावक दोनों सजग रहें और दोनों का ही पर्याप्त स्नेह और उचित मार्गदर्शन बच्चे को मिले तो पहली कक्षा बच्चे के लिए विद्यालयी जीवन का एक सुखद अहसास बन सकती है।

लता पाण्डे
एसोसियेट प्रोफेसर,
प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली–110016

विद्यालय शिक्षा समिति

शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के तहत 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निःषुल्क शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। कानुन के इस प्रावधान को सुनिष्चित करने के लिये विद्यालय शिक्षा समिति को सभी बच्चों को विद्यालय में पहुँच सुनिष्चित करने के लिये प्रयास किये जाने चाहिये। समिति के सभी सदस्य विद्यालय सत्र के आरंभ में इस हेतु बुलाई गई विषेष की बैठक में चर्चा करेंगे एवं बच्चों को विद्यालय तक लाने में अपनी जिम्मेदारी तय करेंगे।

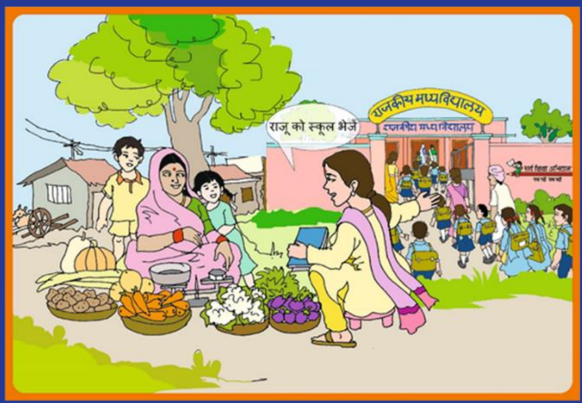

संकलन : **श्री कमलनाथ झा**
आई0एस0ए–एस0सी0ई0आर0टी0

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009

हमारा विद्यालय कैसा होगा

सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि हमें अच्छा विद्यालय मिले, जहाँ

- प्रत्येक शिक्षक के लिए एक क्लासरूम हो।
- प्राथमिक विद्यालय में हर 30 बच्चों के लिए एक शिक्षक और उच्च प्राथमिक विद्यालय में हर 35 बच्चों के लिए एक शिक्षक होना ज़रूरी है।
- छोटे से छोटे विद्यालय में भी कम–से–कम 2 शिक्षक होना ज़रूरी है।
- छठी से आठवीं कक्षा के लिए हर विषय का शिक्षक होना चाहिए, जैसे भाषा, गणित, विज्ञान, कला और स्वास्थ्य शिक्षा।
- लड़कों और लड़कियों के लिए अलग शौचालय होने चाहिएं।
- पीने के लिए साफ़ और पर्याप्त पानी होना चाहिए।
- रसाई घर जहाँ दोपहर का खाना बने।
- खेल का मैदान और खेल का सामान हो।
- पुस्तकालय जहाँ बहुत सी किताबें, नक्शे, चार्ट और डिक्शनरी हो।
- दिव्यांग बच्चों के लिए आसानी से विद्यालय में आने और पढ़ने की सुविधा होनी चाहिए। जैसे वह बच्चे जो व्हीलचेयर का इस्तेमाल करते हैं उनके लिए रैम्प होना चाहिए।
- हर विद्यालय में काम के दिन और छुट्टी के दिन होंगे। प्राथमिक विद्यालय साल में 200 दिन खुलेंगे और उच्च प्राथमिक विद्यालय साल में 220 दिन खुलेंगे।
- नए विद्यालय खुलेंगे और सरकारी विद्यालयों में नए क्लासरूम बनेंगे।
- लड़का हो या लड़की हर बच्चा विद्यालय जाएगा। माँ बाप को सुनिश्चित करना होगा कि वे विद्यालय जाएं और पढ़ाई करें।

Source: UNICEF

केस स्टडी :

श्री धर्मेन्द्र कुमार (प्रखण्ड साधन सेवी, गोरौल, वैशाली, बिहार) का पहला अनुभवः शिक्षकों को स्वयं की वृत्तिक आवश्यकताओं की पहचान करने में प्रोत्साहित करने के लिये ICT का उपयोग

श्री धर्मेन्द्र बताते हैं कि कैसे उन्होंने शिक्षकों की प्रोफशनल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पहली बार ICT का उपयोग किया और किस प्रकार इससे उनको एक बड़े समुह में वार्ता करने का आत्मविश्वास मिला।

'मैंने सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में ICT के उपयोग के बारे में सबसे पहले तब जाना था, जब मैंने DIET वैशाली में SCERT की एक सहयोगी संस्था द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिया था। प्रोजेक्टर के माध्यम से ICT के उपयोग के बारे में जानने का मौका मिला। प्रारम्भ में तो कम व्यवहारिक लगा क्योंकि हमारे विद्यालयों में प्रोजेक्टर की सुविधा नहीं है, लेकिन आगे जब मोबाइल और लैपटॉप के ज़रिये व्यवहार में आया तो समझना और उपयोग करना आसान हो गया। प्रायः अन्य कार्यशालाओं की तरह शुरूआत में सहभागिता तो थी लेकिन घबराहट ICT उपयोग की जटिलता को लेकर थी। हालांकि टीम के सहयोग से धीरे–धीरे सहज लगने लगा।

पूर्व में शिक्षकों के साथ नियमित बैठकों के दौरान मैंने जाना कि वर्गकक्ष में बाल–केन्द्रित सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिये प्रोफेनल क्षमता विकसित करना शिक्षकों की एक बड़ी चिंता और आवश्यकता है। उस कार्यशाला में उन शिक्षकों के छोटे–छोटे वीडियो भी दिखाये गये थे जो अपने वर्गकक्ष में बाल–केन्द्रित विधियों का उपयोग करते हैं और अपने वर्गकक्ष को रूचिकर बनाते हैं। मुझे ये वीडियो हमारे विद्यालय के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक लगे और मैंने सीखा कि इन वीडियो को शिक्षकों के साथ नियमित बैठकों में दिखाया जा सकता है ताकि वे वर्गकक्ष में सहभागितापूर्ण सीखने–सिखाने के नये आयामों को जान सकें। और अब लैपटॉप और स्मार्ट फोन उपलब्ध होने से ICT का उपयोग प्रासंगिक और आसान लगने लगा।

प्रखंड संसाधन केन्द्र पर सभी संकुल समन्वयकों और शिक्षकों के साथ नियमित बैठकों में ICT के उपयोग पर चर्चा करना सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि इसके उपयोग की समझ के बारे में सभी में समानता होना मुश्किल है। तो मैंने सबसे पहले कुछ सकारात्मक सोच के समन्यवयकों और शिक्षकों के साथ सीखने–सिखाने के सरल वीडियो पर चर्चा की और जब उनके वर्गकक्ष थोड़े–थोड़े बदलने लगे तो फिर इनके साथ बड़े समूह में ICT के उपयोग से सीखकर वर्गकक्ष को बेहतर करने का आत्मविश्वास आया।

संकुल स्तर पर शिक्षकों की मासिक बैठक एक उचित मंच है जहाँ आप अपनी शैक्षिक बातों को एकसाथ रख सकते हैं। ऐसे बैठकों में मैं लैपटॉप पर उन शिक्षकों के वीडियो प्रदर्शित करता हूँ जो वर्गकक्ष में बाल–केन्द्रित शिक्षण अपनाते हैं। शिक्षक धीरे–धीरे सीखकर अभ्यास करते गये और चेतना सत्र, वर्गकक्ष, शिक्षकों की सहभागिता और सीखने की योजना पर समझ में बदलाव दिखने लगा और बेहतर शिक्षकों की एक टीम भी उभर कर आयी।

अभी शुरूआत में लैपटॉप के माध्यम से छोटे–छोटे वीडियो दिखाकर और अधिकांशतः मोबाइल पर सक्रिय ग्रुप बनाकर ICT का उपयोग किया जा रहा है क्योंकि लैपटॉप प्रखंड स्तर पर उपलब्ध है और अधिकतर शिक्षकों के पास *एन्ड्रायड* मोबाइल है। इसलिये मोबाइल की सुलभता को देखते हुये

मैंने अप्रेल 2016 में *'पहल गुणवत्ता गोरौल'* whatsapp ग्रुप बनाया जिसपर प्रखण्ड के सभी विद्यालयों से शिक्षकों को जोड़कर केवल वर्गकक्ष संचालन में हो रहे नवाचारी गतिविधियों को माध्यम बनाया। इससे शिक्षकों को बहुत मदद मिली कि वर्गकक्ष में बाल–केन्द्रित विधियों को *किस प्रकार* लागू किया जाये जैसे जोड़ों में और समूह में कार्य करना, बच्चों को चिंतन करने के लिये प्रश्न पूछने को बढ़ावा देना, स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना, बच्चों की प्रगति का आकलन करना आदि।'

श्री धर्मेन्द्र का मानना है कि सीखने–सिखाने में ICT का उपयोग एक मजबूत और सरल साधन है। 'मैंने इसके उपयोग को शिक्षकों के साथ साझा कर कुछ विद्यालय के कुछ शिक्षकों के साथ उनके वर्गकक्ष में सकारात्मक परिवर्तन देखा है। बाल–केन्द्रित शिक्षण विधियों के माध्यम से सीखना–सिखाना आसान और दिलचस्प हुआ है जो छोटे–छोटे वीडियो के द्वारा सीखा गया लेकिन उसपर सतत् कार्य करने की आवश्यकता है.....'।

डा0 सुनीता सिंह
आई0एस0ए–एस0सी0ई0आर0टी0

DIET के शिक्षकों के लिए एक संसाधन केंद्र की कहानी, सेरछिप, मिज़ोरम

हाल ही में मैंने मिजोरम का दौरा किया। मैं भारत के सर्वोच्च साक्षरता वाले जिले सेरछिप में गया। मुझे DIET सेरछिप में कुछ काम था। मैं गैर सरकारी संगठन ZEP और Tata Trusts के सहयोग से स्थापित शिक्षकों के लिए एक अच्छा संसाधन केंद्र में गया। मैंने जिले के विभिन्न हिस्सों के शिक्षकों को केंद्र में उपलब्ध दस्तावेजों, और शिक्षण सामग्री के साथ गुणवत्ता समय बिताते देखा।

इसके अलावा, मैं प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ मिला जो केंद्र के एक तरफ स्थानीय शिक्षण फैसिलिटेटर के मार्गदर्शन में विभिन्न प्रकार के सीखने की सामग्री के साथ खेल रहे थे। मुझे संसाधन केंद्र की भूमिका Teacher Educators, विभिन्न ब्लॉकों के शिक्षकों और इलाके के बच्चों के लिए भी काफी उपयोगी लगी।

संसाधन केंद्र क्यों?

मिजोरम में सतत और व्यापक शिक्षा (सीसीई) की शुरुआत के साथ, प्रत्येक स्कूल में गतिविधि आधारित शिक्षण और सीखने की रचनात्मक पद्धति का अभ्यास किया जाता है। इस प्रकार, शिक्षकों और छात्रों को वास्तव में शैक्षिक संसाधन केंद्र की आवश्यकता होती है। सेरछिप में जिला शैक्षिक संसाधन केंद्र (डीईआरसी) स्थापित करना महत्वपूर्ण था जो छात्रों और शिक्षकों को आकर्षित करेगा और छात्रों को शैक्षिक आवश्यकताएं प्रदान करेगा।

इसका उद्देश्य छात्रों के लिए सीखने के स्तर, विशेष रूप से प्रायोगिक और आनंदपूर्ण शिक्षा को बढ़ाना, पुस्तकों और अन्य प्रारंभिक संसाधन सामग्री सें शिक्षकों, Educators और अभिभावकों को सहयोग प्रदान करना है। संसाधन केंद्र पर पुस्तकों की प्रचूरता, पर्यावरण अध्ययन के लिए सीखने की किट, गणित और अंग्रेजी, ऑडियो–विजुअल सीखने की सामग्री और कंप्यूटर के लिए शैक्षिक सॉफ्टवेयर के साथ अकादमिक रूप से बाल–सुलभ शिक्षण समुदाय बनाने का भी प्रयास किया।

इसकी स्थापना कैसे हुई?

आयोजकों को DIET, सेरछिप के साथ सहयोग करना महत्वपूर्ण लगा क्योंकि संस्थान शिक्षकों के लिए प्री–सर्विस और इन–सर्विस D-El-Ed प्रशिक्षण कार्यक्रम और कंप्यूटर पाठ्यक्रम चला रहा है। यह जिले के भीतर इन–सर्विस शिक्षकों के लिए उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाता है। चूंकि यह जिले के भीतर एकमात्र प्रशिक्षण संस्थान है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य करता है। डीईआरसी के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

- गतिविधि आधारित शिक्षण के माध्यम से छात्रों के सीखने के स्तर को बढ़ाना।
- सूचना और शैक्षिक आवश्यकताओं के संदर्भ में शिक्षकों और Educator को सहायता प्रदान करना।

प्रमुख गतिविधियाँ क्या हैं?

डीईआरसी की स्थापना इस तरह से की गई है कि आगंतुक गतिविधि आधारित शिक्षण के माध्यम से नवीन विचारों और प्रेरणा प्राप्त कर सकें। यह एक बाल–सुलभ केंद्र है, जिसमें संसाधन (resources) गणित, अंग्रेजी, मनोवैज्ञानिक परीक्षण किट और पर्यावरण विज्ञान पर आधारित है। स्थापना के बाद से किंडरगार्टन के छात्र, प्राथमिक विद्यालय, शिक्षक ZEP स्टाफ और DIET प्रशिक्षु DERC का उपयोग करते हैं। कुछ गतिविधियों की मुख्य विशेषताएं;

- शिक्षक सूचना और विचारों को प्राप्त करने के लिए DERC का उपयोग करते हैं ताकि छात्रों को उनके कक्षा से बाहर पढ़ा सके और उन्हें प्रेरित कर सके।
- उनकी पाठ्यपुस्तक की कुछ गतिविधियों को डीईआरसी की शैक्षिक किटों के माध्यम से समझाया जाता है।
- छात्रों की रचनात्मकता के लिए विभिन्न प्रारंभिक संसाधन सामग्री और शैक्षिक किट के माध्यम से प्लेटफार्म तैयार कराया जाता है।
- किंडरगार्टन के छात्र केंद्र में आते हैं और उन्हें आनन्दमय शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलता है।
- स्केचिंग, लेखन और अन्य कक्षा का काम भी केंद्र में प्रदान की गई सामग्री का उपयोग करके डीईआरसी में किया जाता है।
- D.El.Ed. प्रशिक्षु अपनी गतिविधियों, पाठ योजना और कक्षा लेने के लिए केंद्र का उपयोग करते हैं।
- D-El-Ed छात्र मॉडल प्रदर्शन संरचना बनाने के लिए भी इसका उपयोग करते हैं।
- साइंस फेयर और परिवर्तनात्मक मेला का आयोजन भी DERC में DIET सेरछिप द्वारा किया जाता है।

छात्रों को फ्लैश कार्ड, किताबें, सौर मंडल, टेलीस्कोप, बहुरूपदर्शक, गणित किट, विज्ञान किट, भाषा सामग्री, पहेली की व्यवस्था करना, quests, आदि के माध्यम से आनंदमय शिक्षा का अवसर मिलता है। आगंतुक रजिस्टर सूचित करता है कि थोड़े समय में हीं जिला और राज्य स्तर के शैक्षिक कार्यकर्ताओं और अधिकारियों के अलावा 300 से अधिक छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों ने केंद्र का दौरा किया है।

DERC में उपलब्ध संसाधन

डीईआरसी में, गतिविधि आधारित किट और अध्ययन सामग्री प्रदान की गई थी, जिनका ध्यान केंद्र के लाइब्रेरियन द्वारा रखा जाता था। उपलब्ध संसाधनों में से कुछ ऑडियो विजुअल सीडी और USB, इंटरएक्टिव बोर्ड और प्रोजेक्टर, अध्ययन सामग्री और गतिविधि किट विषय विज्ञान, गणित, पर्यावरण अध्ययन, अंग्रेजी और सामाजिक अध्ययन, मनोवैज्ञानिक परीक्षण किट, कंप्यूटर, किताबें, चार्ट, शैक्षिक खेल और अंग्रेजी और गणित worksheet शामिल है।

जिला शैक्षिक संसाधन केंद्र की स्थापना का उपयोग छात्रों और शिक्षकों के द्वारा किया जाता था। विशेष रूप से छात्र केंद्र से नई चीजों को खेलने और सीखने के लिए उत्साहित होते थे और जैसा कि देखने पर विश्वास होता था, छात्र चीजों को देखते थे और उससे सीखते थे जो तब उन्हें यह विश्वास दिलाता था। छात्रों के लिए, सिद्धांत आधारित शिक्षा ज्ञान बढ़ाने और उन्हें सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए के लिए पर्याप्त नहीं है। गतिविधि आधारित के माध्यम से सीखने के स्तर को बढ़ाने और उनके अभिनव कौशल को सुधारने के लिए जो उनके भीतर हैं, DERC ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी।

उपलब्ध सामग्रियों को समय – समय पर अपग्रेड किया गया और जो किट प्रदान की गई हैं, वे अब तक बहुत उपयोगी हैं। गणित, अंग्रेजी और ईवीएस किट के अलावा, मनोवैज्ञानिक परीक्षण किट भी केंद्र में उपलब्ध हैं, जिनका ध्यान मनोवैज्ञानिक, DIET, सेरछिप द्वारा रखा गया था। और यह सेरछिप और DERC के लिए एक उन्नयन है।

Teacher Education पर संसाधन केंद्रों की जरूरत है

इससे मुझे लगा कि हम बिहार में भी समान संसाधन केंद्रों की योजना क्यों नहीं बना रहे हैं? राज्य के विभिन्न हिस्सों में शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कुछ शिक्षक शिक्षा संसाधन केंद्रों को डिजाइन करना उपयोगी हो सकता है। राज्य के विभिन्न हिस्सों में शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कुछ शिक्षक शिक्षा संसाधन केंद्रों को डिजाइन करना उपयोगी हो सकता है। इसमें सभी विषय क्षेत्रों पर विभिन्न प्रकार के उच्च गुणवत्ता ज्मंबीपदह समंतदपदह उंजमतपंसे भी हो सकती है।

विनय पटनायक
टीम लीडर, आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0
अनुवाद : अतुल वर्मा
आई0एस0ए, एस0सी0ई0आर0टी0

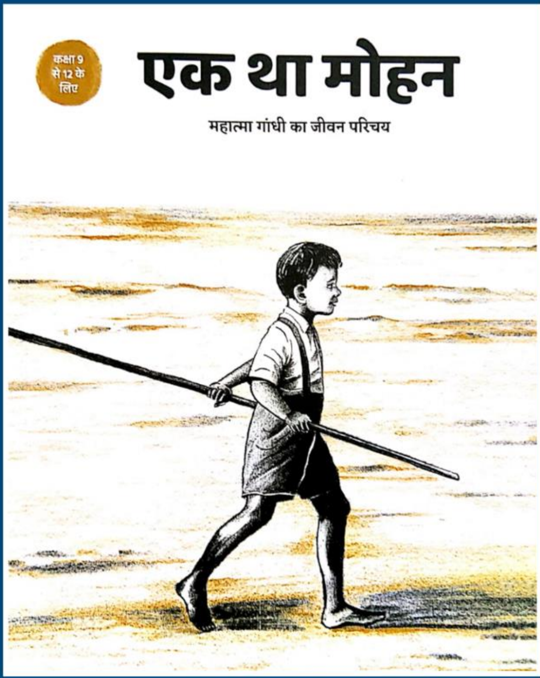

गाँधी कथा वाचन

बिहार के स्कूलों में राष्ट्रपिता के जीवन दर्शन, मूल्य–बोध और उनके प्रमुख कार्यों के बारे में अब बच्चों को प्रारंभिक कक्षाओं से ही परिचय कराया जा रहा है। तीसरी से आठवीं तक की कक्षाओं के बच्चों को 'बापू की पाती' नामक किताब से नियमित रूप से एक पाठ पढ़ाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने 11 अक्टूबर 2017 को राज्य में गांधी कथा वाचन की परंपरा की शुरुआत की थी। सीएम ने 'मिट्टी से नेता भी बनते हैं' और 'च से चंपारण' नामक दो कहानियों का पाठ कर इसकी शुरुआत की थी। सरकार की योजना के तहत प्रदेश के सभी स्कूलों में प्रार्थना सत्र के दौरान गांधी कथा वाचन किया जाना है। इसके लिए शिक्षा विभाग के जनशिक्षा निदेशालय को, तीसरी से आठवीं कक्षा तक के लिए 'बापू की पाती' और 9वीं से 12वीं कक्षा तक के लिए 'एक था मोहन' नामक दो किताबें प्रकाशित कराई है।

प्रदेश के स्कूलों में गांधी कथा वाचन कार्यक्रम के तहत व्यवस्था भी बना दी गई है। तय किया गया है कि बच्चे एक कहानी दो दिन पढ़ेंगे। दो दिन के बाद कहानी और इसे पढ़ने वाला समूह बदल जाएगा। जनशिक्षा निदेशालय के अनुसार प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को राष्ट्रपिता के कार्यों, उनके जीवन–दर्शन और मूल्य–बोध के बारे में ज्ञान देने के लिए इस परंपरा की शुरुआत की गई है।

तीसरी से आठवीं कक्षा तक के बच्चों के लिए प्रकाशित 'बापू की पाती' किताब में 45 कहानियां हैं। इसकी भाषा इतनी सरल है कि कम उम्र के बच्चे इसे आसानी से पढ़ सकेंगे। इस किताब में हर दूसरे पन्ने पर रंगीन कार्टून बने हुए हैं, ताकि बच्चे शब्दों से ज्यादा, चित्रों की भाषा से बात को समझ सकें। इसमें महात्मा गांधी के प्रमुख कार्य, विचार, आंदोलनों में उनकी भूमिका और जीवन के अन्य सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। सरकार का मानना है कि गांधी कथा वाचन की परंपरा से बच्चों को प्रारंभिक स्तर से ही राष्ट्रपिता के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

राज्य के सभी शिक्षक प्रशिक्षण महा विद्यालय में भी गाँधी कथा वाचन की शुरुआत की जा रही है।

संकलन एवं संयोजन : नलिन कुमार मिश्रा,
आई0 एस0 ए0 – एस0 सी0 ई0 आर0 टी0, पटना
फोटो साभार : डी0 आर0 टी0, पटना

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनमोल विचार

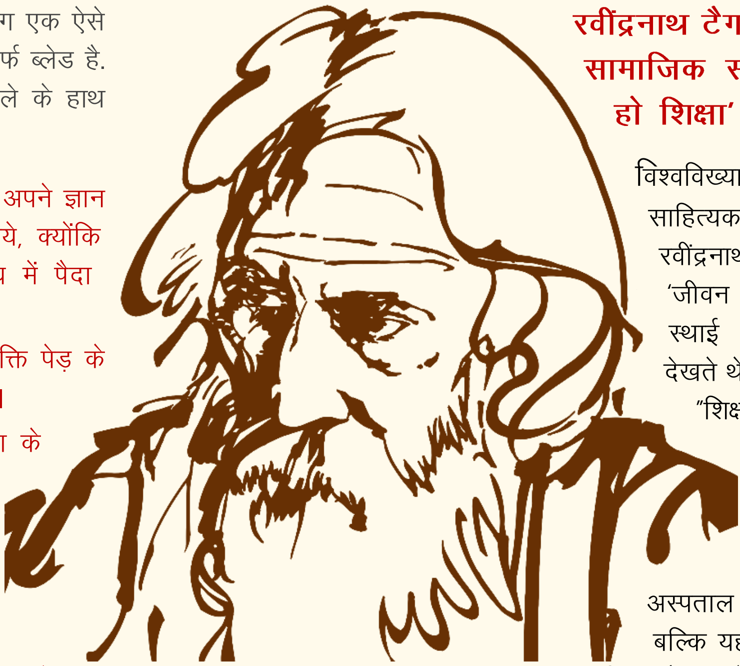

सिर्फ तर्क करने वाला दिमाग एक ऐसे चाकू की तरह है जिसमे सिर्फ ब्लेड है. यह इसका प्रयोग करने वाले के हाथ से खून निकाल देता है।

- किसी बच्चे की शिक्षा अपने ज्ञान तक सीमित मत रखिये, क्योंकि वह किसी और समय में पैदा हुआ है।
- मिटटी के बंधन से मुक्ति पेड़ के लिए आज़ादी नहीं है।
- हर बच्चा इसी सन्देश के साथ आता है कि भगवान अभी तक मनुष्यों से हतोत्साहित नहीं हुआ है।
- हर एक कठिनाई जिससे आप मुंह मोड़ लेते हैं,एक भूत बन कर आपकी नीद में बाधा डालेगी।
- जो कुछ हमारा है वो हम तक आता है; यदि हम उसे ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं।
- तथ्य कई हैं पर सत्य एक है।
- आस्था वो पक्षी है जो सुबह अँधेरा होने पर भी उजाले को महसूस करती है।
- मैं एक आशावादी होने का अपना ही संस्करण बन गया हूँ। यदि मैं एक दरवाजे से नहीं जा पाता तो दुसरे से जाऊंगा– या एक नया दरवाजा बनाऊंगा। वर्तमान चाहे जितना भी अंधकारमय हो कुछ शानदार सामने आएगा।
- मैं सोया और स्वप्न देखा कि जीवन आनंद है। मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है। मैंने सेवा की और पाया कि सेवा आनंद है।
- यदि आप सभी गलतियों के लिए दरवाजे बंद कर देंगे तो सच बाहर रह जायेगा।
- कला में व्यक्ति खुद को उजागर करता है कलाकृति को नहीं।
- हम ये प्रार्थना ना करें कि हमारे ऊपर खतरे न आयें, बल्कि ये करें कि हम उनका सामना करने में निडर रहे।
- तितली महीने नहीं क्षण गिनती है, और उसके पास पर्याप्त समय होता है।
- उच्चतम शिक्षा वो है जो हमें सिर्फ जानकारी ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन को समस्त अस्तित्व के साथ सद्भाव में लाती है।
- बर्तन में रखा पानी चमकता है; समुद्र का पानी अस्पष्ट होता है। लघु सत्य स्पष्ट शब्दों से बताया जा सकता है, महान सत्य मौन रहता है।

Source: https://www.achhikhabar.com/2011/12/23/rabindranath-tagore-quotes-in-hindi/

रवींद्रनाथ टैगोरः 'प्रकृति और सामाजिक संदर्भ से दूर न हो शिक्षा'

विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार और दार्शनिक रवींद्रनाथ टैगोर शिक्षा को 'जीवन के अपूर्व अनुभव के स्थाई हिस्से' के बतौर देखते थे। उनका कहना था, "शिक्षा छात्रों की संज्ञानात्मक अनभिज्ञता के रोग का उपचार करने वाले तकलीफ़देह अस्पताल की तरह नहीं है, बल्कि यह उनके स्वास्थ्य की एक क्रिया है, उनके मस्तिष्क के चेतना की एक सहज अभिव्यक्ति है।"

उन्होंने पाया कि अधिकतर वयस्क बच्चों को इशारों पर नाचने वाली कठपुतलियां समझते हैं। ऐसी प्रक्रिया से उन्होंने बच्चों को बचपन से महरूम कर दिया है। बच्चों को अपने पाठों के लिए केवल स्कूल की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उनको एक ऐसी दुनिया चाहिए जिसकी मार्गदर्शक चेतना व्यक्तिगत प्रेम हो।

टैगोर का शिक्षा दर्शन

उनका मानना था कि 'प्रेम और कर्म' के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। टैगोर के शिक्षा दर्शन को रेखांकित करने वाले तीन सिद्धांत हैं–

1. स्वतंत्रता
2. सृजनात्मक स्व–अभिव्यक्ति
3. प्रकृति और इंसानों के साथ सक्रिय सहभागित

उनका कहना था कि स्वतंत्रता की मौजूदगी में ही शिक्षा को अर्थ और औचित्य मिलता है। उन्होंने तत्कालीन स्कूलों को 'शिक्षा की फ़ैक्ट्री, बनावटी, रंगहीन, दुनिया के संदर्भ से कटा हुआ

और सफेद दीवालों के बीच से झांकती मृतक के आँखों की पुतली' कहा था।

प्रकृति का महत्व

वे मानते थे कि हमारी शिक्षा ने हमें प्रकृति और सामाजिक संदर्भ दोनों से दूर कर दिया है। यह निर्जीव और मूल्यविहीन हो गई है। उन्होंने पाया कि शिक्षा को बच्चों के लिए और ज़्यादा अर्थपूर्ण बनाने के लिए पहला क़दम बच्चे को प्रकृति के संपर्क में लाना होगा।

यह शिक्षा को मात्रा और गुणवत्ता में नैसर्गिक बनाकर हासिल किया जा सकता है। प्रकृति के साथ संपर्क से बच्चा विशाल दुनिया की वास्तविकता, निरंतरता और खुशी से परिचित होगा।

हालांकि टैगोर ख़ास अर्थ में शिक्षाविद् नहीं है क्योंकि उन्होंने शिक्षा के बारे में नहीं लिखा, लेकिन शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण की झलक उनकी कविताओं, गद्य और निबंधों में मिलती है।

किताबों की गुलामी

बच्चों के संदर्भ में वह स्वतंत्र, मुक्त गतिविधि और उनके स्वास्थ्य व शारीरिक विकास के लिए खेल के हिमायती थे।

उन्होंने पाया, "अगर बच्चे कुछ नहीं सीखते हैं तो भी उनको खेलने का पर्याप्त समय मिलना चाहिए। पेड़ों पर चढ़ना, तालाब में तैरना, फूल तोड़ना और छिलना, प्रकृति के साथ हज़ार शरारतें जारी रखने से उनके शरीर को पोषण, मन को ख़ुशी और बचपन की नैसर्गिक प्रेरणाओं को संतुष्टि मिलेगी।"

टैगोर ने इस सच्चाई पर अफसोस जताया था कि तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था किताबों की गुलामी को प्रोत्साहन देती थी। भारत और दुनिया के तमाम देशों में यह स्थिति आज भी बरकरार है।

उन्होंने कहा, "हमारी शिक्षा स्वार्थ पर आधारित, परीक्षा पास करने के संकीर्ण मक़सद से प्रेरित, यथाशीघ्र नौकरी पाने का जरिया बनकर रह गई है जो एक कठिन और विदेशी भाषा में साझा की जा रही है। इसके कारण हमें नियमों, परिभाषाओं, तथ्यों और विचारों को बचपन से रटना की दिशा में धकेल दिया है। यह न तो हमें वक़्त देती है और न ही प्रेरित करती है ताकि हम ठहरकर सोच सकें और सीखे हुए को आत्मसात कर सकें।"

शिक्षा का उद्देश्य

उन्होंने लिखा कि 'सोचने की शक्ति और कल्पनाशक्ति निःसंदेह वयस्क जीवन के लिए दो महत्वपूर्ण क्षमताएं हैं।' इसलिए उन्होंने महसूस किया कि इनके विकास को बचपन से प्रारंभ होना चाहिए।

उनके मुताबिक़ शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों को वास्तविक जीवन की सच्चाइयों, परिस्थितियों और परिवेश के साथ परिचय और समायोजन था.

उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा था कि अवास्तविक शिक्षा ही हमारे लोगों में बौद्धिक बेईमानी, नैतिक पाखंड और मातृभूमि के प्रति अज्ञानता के लिए जिम्मेदार है।

इसलिए उन्होंने तर्क देते हुए कहा कि शिक्षा और हमारी ज़िंदगी के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास होना चाहिए।

इस तरह से टैगोर ने शिक्षा की उपयोगिता के बारे में अपने विचारों को सामने रखा, वे मानते थे कि शैक्षिक संस्थाओं का आर्थिक जीवन के साथ गहरा जुड़ाव होना चाहिए।

जीवन की सहजता में विश्वास

टैगोर आत्म–अनुशासन और अनावश्यक पदार्थों से मुक्त सहज तरीके से जीवन जीने के आदर्श में विश्वास करते थे।

उन्होंने कहा, "हमें इस विचार को मूर्त रूप देना चाहिए। उन्होंने हमारे स्कूलों के संदर्भ में अनावश्यक चीज़ों को कम करने का विचार रखा।

उन्होंने पाया कि सहजता और स्वाभाविकता वास्तविक सभ्यता में शामिल होती हैं। इसलिए हमारे बच्चों को इसके लिए बहुत प्रारंभ से इसके लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

वे मानते थे कि वस्तुओं की विलासिता से मुक्त होकर बच्चा अपने हाथों और पैरों के वृहत्तर उपयोग करने के साथ–साथ ज़मीन और धरती से परिचित हो सकेगा।

शिक्षण विधि के संदर्भ में सुझाव

शिक्षण विधि के संदर्भ में उनका सुझाव था कि "प्रकृति के तथ्यों का अध्ययन प्रकृति की वास्तविक परिघटनाओं और प्रकृति में वन्य जीवन के माध्यम से होना चाहिए।"

उन्होंने कहा कि इतिहास, भूगोल और अन्य सामाजिक विज्ञान के तथ्यों का अध्ययन जहाँ तक संभव हो प्रत्यक्ष स्रोतों के माध्यम से होना चाहिए।

विद्यार्थियों के अपने सामने मौजूद वास्तविक वस्तुओं के संपर्क में आने से उनके अवलोकन की क्षमता और तार्किक शक्ति का विकास होगा।"

समाधान केंद्रित विमर्श की जरूरत

इसके आगे उन्होंने लिखा, "छात्रों को सोचने के लिए प्रेरित करना चाहिए। किताबों में उन्होंने जो कुछ पढ़ा है उसके ऊपर कई तरह के सवाल और जवाब होना चाहिए।

अगर वे किताबों की सामग्री की आलोचना करते हैं तो हमें वास्तव में मानना चाहिए कि उनको सच्ची शिक्षा मिली है।

रोज़मर्रा के जीवन की विभिन्न समस्याओं को उनके सामने पेश किया जाना चाहिए और उनके समाधान पर केंद्रित विमर्श होना चाहिए। शिक्षा, कक्षा में पढ़ाने की तुलना में बड़ी चीज़ हैं।

गतिविधि का सिद्धांत

टैगोर की शैक्षणिक विधियों का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत 'गतिविधि का सिद्धांत' था। यह उनके इस दर्शन पर आधारित था कि शरीर और मन को विभाजित नहीं किया जा सकता।

उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि शारीरिक गतिविधि से केवल शरीर को स्फूर्ति नहीं मिलती, इससे मन भी ऊर्जावान होता है। इसी सिद्धांत के आधार पर उन्होंने चलते–फिरते स्कूलों को आदर्श स्कूल की संज्ञा दी।

उन्होंने कहा कि चलते–चलते पढ़ाना शिक्षा की सबसे अच्छा तरीका है। ऐसा मात्र इस कारण से नहीं है क्योंकि चलना प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से बहुत सारी चीज़ों को सीखने में मदद करता है।

ऐसा इसलिए भी क्योंकि चलते समय हमारा मानसिक संकाय ज़्यादा जाग्रत और चीज़ों को ग्रहण करने वाली स्थिति में होता है।

सक्रिय रूप से सीखने की उपयोगिता

इस तरह सक्रिय रूप से सीखना हम जीवित इंसानों के लिए हर तरह से उपयोगी है। दूसरी तरफ़ क्लॉसरूम में होने वाली स्थिर शिक्षा जो पढ़ाया जा रहा है उससे और छात्रों की अपनी पहल के बीच एक अलगाव का कारण बनती है।

इस सिद्धांत को 'शांति निकेतन' में अपनाया गया है। यहाँ तक कि क्लॉसरूम में टैगोर ने गति के इस सिद्धांत को लागू किया।

उन्होंने लिखा, "मैं कक्षा के दौरान सभी लड़के–लड़कियों को कूदने, यहाँ तक कि पेड़ पर चढ़ने, किसी कुत्ते या बिल्ली के पीछे भागने या किसी पेड़ की डाली से कोई फल तोड़ने की अनुमति दूँगा। मैं अपने दिमाग़ में यह बात ध्यान रखने का प्रयास किया कि बच्चा शब्दों को सीखने और एक पूरे वाक्य को सीखने के लिए अपने पूरे शरीर का इस्तेमाल करे।हमारे अधिकांश अध्यापक नाराज हो जाते जब वे मेरी कक्षा के बच्चों को हँसते, शोर मचाते और अपने हाथों से ताली बजाते हुए सुनते थे।

ऐसी होनी चाहिए कक्षा

अगर एक लड़का मुझसे कहेगा, "क्या मैं दौड़ने के लिए जा सकता हूँ? हाँ, जरूर', मैं ऐसा कहुँगा क्योंकि इससे उसकी कुछ बोरियत दूर होगी और दोबारा वह सक्रिया महसूस करेगा, अब उसके लिए चीज़ों को ग्रहण करना और समझना आसान होगा।

ऐसा उस समय होता है जब बच्चे बोरियत महसूस करते हैं, उनके मन की निष्क्रियता और ग्रहण करने की उनकी आंतरिक इच्छा बिना किसी शारीरिक गति के अभाव में ठहर जाती है और वे निर्जीव पाठों को आत्मसात करना बंद कर देते हैं।

टैगोर ने बच्चों के पाठ्यक्रम में नाटक और संगीत को शामिल करने पर काफ़ी ज़ोर दिया क्योंकि वह मानते थे कि यह बच्चों की आत्म–अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम हैं।

बच्चों की किताबें कैसी हों?

जहाँ तक बच्चों के किताबों की बात है उनका मानना था कि किताबे आसान और आकर्षक होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि शुरुआत में पाठों को आसान रखना चाहिए और बाद में बच्चों के भीतर स्वतः इसके लिए लगाव पैदा हो जाएगा। वह यह भी मानते थे कि विदेशी भाषा शुरू करने की बजाय सारी शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए।

टैगोर के विचारों में प्रकृतिवाद और मानवतावाद के प्रति काफ़ी विश्वास दिखाई देता है। बचपन के बारे में उनके विचारों और उसका महत्व 'बाल–केंद्रित शिक्षण' की बुनियाद रखते हैं जिसका हाल के दिनों में फिर से बढ़ा है।

टैगोर सृजनात्मक स्व–अभिव्यक्ति के पैरोकार थे जिसे आधुनिक शिक्षा में काफ़ी महत्व दिया जाता है।

(दिल्ली विश्वविद्यालय के एज्यूकेशन डिपार्टमेंट में प्रोफ़ेसर नमिता रंगनाथ की किताब 'द प्राइमरी स्कूल चाइल्ड' का हिंदी अनुवाद।)

संकलन : नलिन कुमार मिश्रा
एवं शाश्वत बसु
आई0एस0ए–एस0सी0ई0आर0टी0

एक शिक्षक के प्रयोग... डेविड ऑसबरा

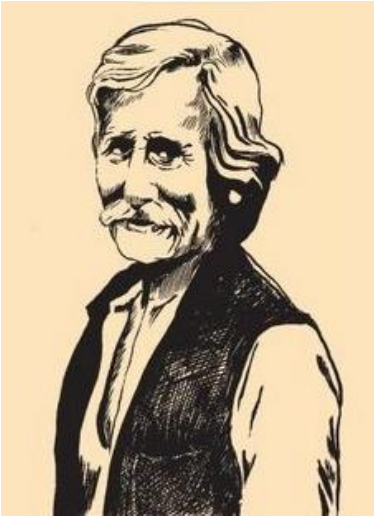

शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य, बच्चों को उन बातों से अवगत कराना है जो वह सामान्यत: नहीं जान पाते हैं। शिक्षा ऐसी हो जो एक संकीर्ण, कम सुविधाओं तथा अवसरों वाले समाज में रहने वाले ग्रामीण बालक को आगे बढ़ने में सहायता प्रदान कर सके। इस नजरिये के समर्थकों का यह मानना है कि हम जो शिक्षा प्रदान करें वह सुविधाविहीन तथा सुविधासंपन्न बच्चों के लिए एक समान अवसर उपलब्ध करने वाली होनी चाहिए। एक अच्छी शिक्षा ही,समाज में व्याप्त असमानता से पार पा सकती है।

डेविड ऑसबरा के नीलबाग स्कूल का प्रयोग इसी उद्देश्य को समर्पित था।

डेविड ऑसबरा के निधन को आज चौदह वर्ष बीत चुके हैं। उनका नाम और शखसियत ऐसी थी जिसे भुला पाना आसान नहीं है। इतने वर्षों बाद भी क्यों कोई डेविड से शिक्षा पर काल्पनिक संवाद करता है? मैं अपने आप से यह प्रश्न पूछती हूँ। पर मैं यह भी जानती हूँ कि यह सवाल केवल शब्दों का खेल भर है, क्योंकि इसका जबाब मेरे पास पहले से ही है।

डेविड ऑसबारा एक अद्‌भुत शखसियत थे–गर्मजोशी से भरे जोशीले, रचनात्मक व्यक्ति और करिश्माई शिक्षक। पढ़ने के प्रति उन्हें जबरदस्त मोह था लेकिन भारत में मौजूदा तमाम शिक्षा प्रणालियों से उनका मोहभंग हो चूका था। इसी मोहभंग की स्थिति ने उन्हें नीलबाग के विचार को बुनने तथा उसे एक ठोस रूप देने की दिशा में आगे बढ़ाया। इस स्कूल की मूल अवधारणा विभिन्न दर्शनों से ली गयी थी, लेकिन इसका मूल स्वरुप, विशुद्ध रूप से डेविड ऑसबरा का था, जो अपने आप में अनूठा था।

डेविड के निजी जीवन की संक्षिप्त जानकारी विभिन्न सन्दर्भों को समझने में सहायक होगी। डेविड ऑसबरा जन्म से अंग्रेज,वर्ण से भारतीय और मिजाज से विश्व नागरिक थे।

चालीस के दशक में हाई स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद, दुसरे विश्व युद्ध के अंतिम दौर में डेविड,रॉयल एयर फ़ोर्स में भर्ती हो गए और भारत भेज दिए गए। उस समय वो भारत के उस इलाके में रहे जो आज बांग्लादेश है। भारत के ग्रामीण जीवन, यहाँ के लोगों, तथा यहाँ के संगीत के साथ उनके प्यार और लगाव का ऐसा सिलसिला शुरू हुआ, जो अगस्त 1984 में, उनके निधन तक चलता ही रहा।

युद्ध समाप्त होने के बाद, डेविड ने, लंदन विश्वविद्यालय के भारतीय इतिहास तथा संस्कृति संबंधी पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। उन्होंने भारत लौटने के अपने लक्ष्य को ध्यान रखते हुए संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू का अध्ययन किया। लंदन के इस पाठ्यक्रम में डिग्री लेने के बाद डेविड भारत लौट आए। शिक्षक होने की प्रबल इच्छा डेविड को जे. कृष्णमूर्ति द्वारा स्थापित ऋषि वैली स्कूल की तरफ ढेल दिया। कुछ वर्षों तक वहां काम करने के बाद डेविड,नीलगिरी के, ब्लू माउनटेन स्कूल चले गए। बाद में वे मैसूर आ गए,यहां उन्होंने क्षेत्रीय अंग्रेजी महाविद्यालय स्थापित किया व् कुछ समय तक सर्वोच्च जिम्मेदारी संभाली।

फिर वे ब्रिटिश काउन्सिल के,अंग्रेजी को दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाने के कार्यक्रम को चलने वाले डाल में शामिल हो गए। इस डाल में उन्हें मद्रास में, कारपोरेशन के एक स्कूल में गरीब बच्चों के लिए पुस्तकें तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। यहाँ उन्हें भारतीय बच्चों की जरूरतों के अनुरूप पुस्तकों एवं कार्य पुस्तिकाओं कि योजना तैयार करने का मौका मिला। उनकी सरलता और मजकिये स्वभाव की छाप इन पुस्तकों के प्रत्येक पन्ने पर देखी जा सकती है – और उनके मौलिक चित्रों के कारण ही ये पुस्तकें बच्चों के लिए बेहद आकर्षक बनी।

ब्रिटिश काउसिल,जो कि ब्रिटिश उच्चायोग का एक अभिन्न अंग है,की ट्रान्सफर संबंधी एक नीति है ।इस नीति के तहत कोई भी व्यक्ति एक स्थान पर पंद्रह वर्ष तक ही रह सकता है। डेविड को जब अगली पोस्टिंग के लिए भारत छोड़ने को कहा गया तो उन्होंने वालिंटरी रिटायरमेंट ले लेना ही बेहतर समझा। उन्होंने कर्नाटक के कोलार जिले में, आठ एकड़ जमीन खरीदी और वहां अपने नीलबाग के सपने को ठोस रूप देना शुरू किया। नीलबाग का पूरा प्रयोग, डेविड ऑसबरा की,लीक से हटी जिंदगी की,कहानी जैसा ही है। शायद स्वतंत्र भारत में,गाँव के बच्चों को,विश्व स्तर की उम्दा और क्वालिटी शिक्षा देने का यह अपने जैसा पहला प्रयास था।

डेविड एक सम्पूर्ण व्यक्ति थे–उनका दर्शन उनके काम,उनकी जीवन शैली,उनके गीतों,उनके अध्यापन आदि तमाम कार्यों में दिखता था। ये तमाम चीजें एक दुसरे से गुथी हुई थी। नीलबाग शुरू करने के बाद डेविड ने यह कहना छोड़ दिया कि "काश मैं ऐसा कर पाता! "अब वो वही काम करने लगे जिसे वो वाकई में करना चाहते थे। अपनी अद्‌भुत प्रतिभा के अनुसार उन्होंने कई चीजें बहुत ही बेहतर ढंग से की।

सबसे पहले पेड़ लगाए गए। फिर उनके आस–पास डेविड द्वारा तैयार डिजायनो व लौरी बेकर की सलाह के आधार पर, झोपडियां बनाई गई। डेविड स्वयं एक बढ़ई थे और शुरुआत में कक्षाओं के लिए कमरे तथा कार्यशाला का डिजायन तैयार करने के साथ–साथ उनका निर्माण भी खुद उन्होंने ही किया था ।इसके साथ ही परिवारों के रहने के लिए घर भी बनाए गए। परिसर की बाकी इमारतों का निर्माण पाठ्यक्रम का ही हिस्सा बन गया। कुछ महीनों के बाद बच्चों ने उस क्षेत्र के पारंपरिक गोल कमरे (सुतिल्ला)का निर्माण भी किया।

नीलबाग की अवधारणा, अध्ययन, अवलोकन,विचार तथा शिक्षण की कल्पना डेविड के लंबे अनुभवों से छनकर तैयार हुई थी। नीलबाग में आने वाले अक्सर पूछा करते कि यह स्कूल से कैसे भिन्न हैं? इस स्कूल का दर्शन क्या है? और क्या नीलबाग की अवधारणा को अन्य स्कूलों में इसी रूप में लागू किया जा सकता है? डेविड खुद पुरे उत्साह एवं सफाई के साथ मजाक करते हुए इनका उत्तर देते थे।

वर्ष 1980 का एक कार्यदिवस। मैं सुबह नौ बजे नीलबाग पहुंची। फूस की छाजन वाली एक झोपड़ी, (जिसमे तीन से अठारह साल तक की उम्र के 25 विद्यार्थी एक साथ बैठ सकते हों) के एकदम स्वच्छ वातावरण में बहुत मधुर स्वर में कुछ लोग गा रहे थे। डेविड आगे–आगे गा रहे थे। अन्य तीन शिक्षक उनका साथ दे रहे थे ।इन गीतों में एक चौका देने वाली विविधता थी। गुजराती भजन,असमिया नाविक गीत,केरल का मछुआरा– संगीत, अंग्रेजी –प्रेमगीत फ्रेंच तथा जर्मन लोकगीतों के साथ तेलगु भक्ति–संगीत सब भी एक साथ प्रभावित हो रहे थे ।यहाँ हमारे स्कूलों की तरह,प्रत्येक बच्चा, अपनी आवाज को सबसे ऊँचा सुनाने के प्रयास में नहीं लगा था, बल्कि सभी बच्चे एक लय तथा संयत आवाज में एक दुसरे के साथ स्वर मिलकर गा रहे थे।

यहाँ प्रतिदिन सुबह को एक घंटा संगीत होता है जिसमे सभी बच्चे साथ होते हैं ।इससे सभी एक दुसरे के साथ मित्रता बनाने में मदद मिलती है। डेविड की यह स्पष्ट मान्यता थी कि कोई बच्चा अच्छा गा सके इसके लिए उसे अच्छी तरह से सुनना भी सिखाया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में भी इस बात को सिद्धांत के रूप में बताया गया था कि शांति के महत्त्व को समझकर ही कोई बालक ध्वनि के महत्त्व को जान सकता है। गीतों का संग्रह बढ़ता जाता क्योंकि संगीत जानने वाले प्रत्येक आगन्तुक से बालक, एक नया गाना गाने का अनुरोध करते। संगीत के घंटे के बाद बच्चे स्वयं आलमारियों में रखी पाठ्यसामग्री उठा लेते। यह सामग्री इस तरह विकसित की गयी थी कि बच्चे अपने आप,अथवा अपने से बड़े बच्चों की सहायता से,इन्हें पढ़ समझ सकें। शिक्षक बच्चों की मदद के लिए अथवा उनका ध्यान रखने के लिए हमेशा मौजूद रहते लेकिन पाठ शुरू करने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं।

अंग्रेजी और तेलगू में तैयार कि गई इस खुद करके सीखने वाली सामग्री का बड़ा हिस्सा कार्ड,पहेलियों तथा स्थानों व गतिविधियों के नामों से जुड़े शब्दों के खेलों का होता ।डेविड व अन्य शिक्षकों द्वारा तैयार,चित्रों अथवा लिखित रूप में बहुत सावधानीपूर्वक तैयार की गयी पाठ्यसामग्री का वर्गीकरण उसकी जटिलता के आधार पर किया गया था। इससे बालक प्रत्येक अभ्यास को पूरा करते हुए एक निश्चित मार्ग पर आगे बढ़ सकते थे। बड़े बच्चों के लिए गणित की कक्षाएं आमतौर पर दोपहर में भोजन की छुट्टी के बाद रखी जाती थीं ।यह इस बात पर बल देने के लिए किया जाता था कि अगर पढाई का तरीका मजेदार हो तो दिन का कोई भी समय सीखने के लिए समान रूप से उपयुक्त हो सकता है।

पाठ्यक्रम के अन्य महत्वपूर्ण पक्षों में बालक–बालिकाओं को संगीत सिखाना व उसे कैसेट–प्लेयर पर बजाना,मिट्टी का काम करना व कुम्हार के चाक पर बर्तन बनाना, बढ़ईगीरी का काम करना और वस्तुएं बनाना, कशीदा काढना व क्रेयान (रंगीन चाक) तथा पानी के रंगों से चित्र बनाना सिखाया जाना आदि प्रमुख थे। ये लिंगभेद विहीन पाठ्यक्रम का,एक सुन्दर नमूना था। इसने मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच की दुरी को भी मिटाने का काम किया क्योंकि स्कूल की कार्ययोजना में हस्तशिल्प को बहुत महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य स्थान दिया जाता था। हाथ से काम करना,उसमे दक्षता व अचूक सूक्ष्मता लाना,एक बार माटी हाथ में लेने के बाद एक कलात्मक वस्तु तैयार करने के लगन, आरी हाथ में हो तो सफाई के साथ लकड़ी को काटना, आदि को पाठ्यक्रम में उतना ही महत्व दिया गया था जितना भाषा अथवा गणित को।

शिक्षा केवल दिमाग में होने वाली प्रक्रिया नहीं है बल्कि वह पुरे व्यक्तित्व का निर्माण करती है। बेहतरीन शिक्षा तभी संभव है जब बच्चों को शिक्षकों तथा सहपाठियों के स्नेह के बल पर आत्म सम्मान को विकसित करने के अवसर मिले। शिक्षक तथा सीखने वाले के बीच ऐसा विश्वास तथा समझ किसी परिवार में भी मिलना मुश्किल है।

डेविड कहा करते थे कि उनके सामने अनुशासन की कोई समस्या आती ही नहीं थी क्योंकि अनुशासन पर वहां कतई जोर नहीं था। नीलबाग में कोई नियम नहीं थे। सिर्फ एक आचारसंहिता थी जिसके पालन के आदेश नहीं दिए जाते थे बल्कि उदाहरणों के जरिये उसे अभ्यास में लाया जाता था। शिक्षक के लिए इसमें ढेरों चुनौतियाँ तथा जिम्मेदारियां थी। शनिवार को सुबह 11 बजे का समय स्कूल सफाई के लिए तय था। सभी शिक्षकों व छात्रों की यह साझी जिम्मेदारी थी। काम सबके बीच बंटे हुए थे और जिम्मेदारियां बदलती रहती थी जिससे कि हर एक व्यक्ति की प्रत्येक काम करने की बारी आये। झाड़–पोंछ, धुलाई, कील गाड़ना, मरम्मत करना,पेंट करना, रद्दी जलाना,ब्लैक–बोर्ड पर कालिख रंगना,सभी काम निर्धारित क्रम के अनुसार होते थे। शनिवार

के दिन वहां सब चुपचाप चीटियों की फ़ौज की तरह अपने–अपने काम में व्यस्त हो जाते। डेविड अपनी लुंगी को को घुटनों तक मोड कर लपेटे हुए,सीटी बजाते, कहीं पर अपने हिस्से के काम को अंजाम दे रहे होते।

कुल मिलाकर वहां न कोई काम नीचा था,न कम महत्वपूर्ण,न तो स्कूल का कोई पीरियड उबाऊ था और न कोई पाठ अनुपयोगी। डेविड का यही सिद्धांत था – जो कुछ भी किया जाए पूरी लगन और बेहतरीन ढंग से किया जाए।

वे अनेक बार,एक–एक बच्चे से अकेले बातचीत करते तो कई बार बच्चों के किसी समूह को एक साथ भी सिखाते। लेकिन उनका मानना था कि जब एक ही समूह में सभी उम्र के बच्चों को शामिल किया जाता है तो उनमे एक–दुसरे से सीखने की प्रवृति पनपती है और उनके बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा कम रहती है। प्रतिभा के निखार के लिए कम्पटीशन हो इसके लिए नीलबाग की शिक्षा में कहीं कोई जगह नहीं थी। डेविड का मानना था कि समर्थ बनने की इच्छा रखना और कक्षा में दूसरों से बेहतर होने कि इच्छा रखना,दो अलग–अलग बातें हैं और वे इनमे से पहली पर यकीन करते थे।

एक और शिक्षा शास्त्रीय सिद्धांत जिसे नीलबाग ने पक्की तरह अपनाया जाता था वो था वर्टीकल ग्रुपिंग का (यानि अलग–अलग उम्र के बच्चों का,एक ही साथ पढना)। ज्यादातर स्कूलों में उम्र के अनुसार कक्षाएं होती है और इसके पीछे मान्यता है कि एक ही उम्र के बच्चों को एक कमरे में बैठ कर पढ़ाना आसान होता है। लेकिन डेविड ऐसा औपचारिक विधि से पढ़ाने में विश्वास नहीं रखते थे। वो सीखने के लिए सही वातावरण बनाने पर जोड़ देते थे।

एस. आनंदलक्ष्मी
– हिन्दू 14 व 21 सितम्बर 1997,
अनुवाद – देवयानी

सावित्रीबाई फुले – देश की पहली महिला टीचर

सावित्रीबाई फुले को महिलाओं के लिए काम करने के लिए जाना जाता है। उनका जन्म एक दलित परिवार में 3 जनवरी, 1831 में महाराष्ट्र के सतारा में एक छोटा से गांव नायगांव में हुआ था. सिर्फ 9 साल की उम्र में उनकी शादी 13 साल के ज्योतिराव फुले से कर दी गई थी।

जानते हैं उनके बारे में कुछ खास बातें।

- सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक भेदभाव और कई रुकावटों के बावजूद उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की और बाकी महिलाओं को भी शिक्षित करने का बीड़ा उठाया।
- सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला अध्यापिका और नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेत्री कहा जाता है।
- उन्होंने अपने पति क्रांतिकारी नेता ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले थे. पहला स्कूल 1848 में पुणे बालिका विद्यालय खोला था।
- सावित्रीबाई ने समाज में प्रचलित ऐसी कुप्रथाओं का विरोध किया जो खासतौर से महिलाओं के विरूद्ध थी. उन्होंने सतीप्रथा, बाल–विवाह और विधवा विवाह निषेध के खिलाफ आवाज उठाई और जीवनपर्यंत उसी के लिए लड़ती रहीं।
- उन्होंने एक विधवा ब्राह्मण महिला को आत्महत्या करने से रोका और उसके नवजात बेटे को गोद लिया. उसका नाम यशवंत राव रखा. पढ़ा–लिखाकर उसे डॉक्टर बनाया।
- 1897 में बेटे यशवंत राव के साथ मिलकर प्लेग के मरीजों के इलाज के लिए अस्पताल खोला था।
- उन्होंने 28 जनवरी 1853 को गर्भवती बलात्कार पीड़ितों के लिए बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना की।
- सावित्रीबाई ने उन्नीसवीं सदी में छुआ–छूत, सतीप्रथा, बाल–विवाह और विधवा विवाह निषेध जैसी कुरीतियां के विरुद्ध अपने पति के साथ मिलकर काम किया।
- प्लेग के मरीजों की देखभाल करते हुए वो खुद भी इसकी शिकार हुईं और 10 मार्च 1897 को उनका निधन हुआ।

तोत्तो-चान क्यों पढ़ें ?

तोत्तो–चान का नाम आपके लिए अपरिचित नहीं होगा। सम्भव है यह किताब आपके पुस्तकालय में हो। आपने पढ़ी भी हो। और अगर पढ़ी है, तो फिर आपसे ज्यादा कुछ नहीं कहना है। और अगर नहीं तो इस किताब को पहली फुरसत में पढ़ डालिए।

तोत्तो–चान की वजह से जापान ने स्कूल शिक्षा का ऐसा मॉडल तैयार किया जो पूरी दुनिया में जॉयफुल स्कूल के रूप में बहुत लोकप्रिय हुआ। तोत्तो जब दो–तीन बरस की थी तभी से उसे घर की खिड़की पर खड़े रहने की आदत बन गई। रास्ते से गुजरने वाले हर शख्स को आवाज देकर उससे बतियाती। और इस तरह उसके पास ज्ञान का अद्भुत खजाना भर गया। सात साल की होने पर उसकी माँ उसे स्कूल में दाखिला दिलाने ले गईं। वह अपने शिक्षकों से इतने सवाल करती कि वे उससे जल्द ही तंग आ जाते और उसकी माँ से उसे स्कूल से निकाल लेने को कहते। तोत्तो चान को करीब सात स्कूल छोड़ने पड़े। अन्त में उसकी माँ उसे एक अलग तरह के स्कूल में ले गईं। यह स्कूल रेल की खराब पड़ी बोगियों में चलता था। इस स्कूल को देखते ही तोत्तो ख़ुशी से उछल पड़ी। स्कूल की संचालिका ने जब उससे पूछा कि तुम पहाड़ खाओगी या समुद्र, तो वह चौंक गई। बाद में जब उसने देखा कि जो बच्चे पहाड़ खाना चाहते थे उन्हें आलू दिया गया और जो समुद्र खाना चाहते थे उन्हें मछली। इससे उसने सीखा कि आलू पहाड़ पर पैदा होते हैं और मछली समुद्र में।

इस किताब में तोत्तो–चान के स्कूली दिनों के प्रारम्भिक अनुभवों को बहुत

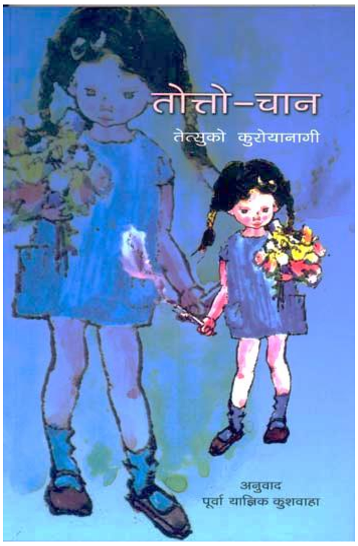

ही सुन्दर ढंग से संजोया गया है। तेत्सुको कुरोयानागी ने अपनी विषयवस्तु के अनुरूप ही बड़े सहज, सरल और रुचिकर ढंग से यह कहानी लिखी है। शैली की सादगी और भाषा की रवानगी ऐसी है कि किसी भी उम्र का पाठक पहले पन्ने पर आने के बाद ही आसानी से अन्तिम पन्ने तक की यात्रा तय कर लेता है। इस किताब के शब्द–दर–शब्द गुजर कर अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यह किताब जापान ही नहीं बल्कि दुनिया भर में क्यों मशहूर हो गई। बाल–केन्द्रित शिक्षा के सारे सिद्धान्त अपने वास्तविक व ठोस रूप में इन कहानियों में पाए जाते हैं। इसलिए यह सीखने–सिखाने व स्कूल की एक अभिनव और साहसिक परिकल्पना प्रस्तुत करती है। दुनिया भर में इस पुस्तक से प्रेरणा लेकर नए किस्म के स्कूल खुले, जो सोसाकु कोबायाशी के विचारों से प्रभावित हैं।

कथानक में लेखक ने बताया है कि किस तरह से तोत्तो–चान को अपने पहले स्कूल से निकाल दिया गया, क्योंकि उस स्कूल की शिक्षिका को लगता था कि वह एक अनुशासित बच्ची नहीं है। शिक्षिका चाहती थी कि तोत्तो–चान सिर्फ वही करें जिसका निर्देश शिक्षिकाओं द्वारा उसे दिया जाए। मगर तोत्तो–चान तो घण्टों तक खिड़की में खड़े होकर प्रकृति को निहारती रहती या फिर किसी चिड़िया से संवाद करती थी कि वह कैसी है और क्या कर रही है। शिक्षिका को उसके इस व्यवहार के कारण कक्षा संचालन में काफी मुश्किल हो रही थी। इन सभी बातों से परेशान होकर शिक्षिका तोत्तो–चान की माँ को स्कूल में बुलाकर सारी घटनाएँ बताती, जो कि बाद में तोत्तो–चान के स्कूल से निकाल दिए जाने का कारण बनी।

तोत्तो–चान को नए स्कूल तोमोए गाकुएन में दाखिला मिलता है। स्कूल में दाखिला हो जाने के बाद भी उसकी माँ काफी चिन्तित रहती थी कि पता नहीं यहाँ पर भी कब तक ठीक रहे। यह डर लम्बे समय तक उनके मन में बना रहा। लेकिन नया स्कूल तोत्तो–चान को बहुत अच्छा लगा। इसकी वजह थी– नए स्कूल में शिक्षकों का व्यवहार। स्कूल में पढ़ने–पढ़ाने के तरीके भी निराले थे। शिक्षक की बच्चों के प्रति मान्यता भी पहले स्कूल से भिन्न थी। बच्चे सीखते कैसे हैं, इस बात की गहरी समझ होने के कारण शिक्षण पाठ्यपुस्तक पर केन्द्रित होने की बजाय प्रकृति के निकट था। विषयों की कोई दीवार नहीं थी और बच्चे के मन–संसार से पढ़ाई अनिवार्य रूप से जुड़ी हुई थी।

किताब में लेखक ने शिक्षक और बच्चों के बीच के रिश्तों को बखूबी तरीके से दर्शाया है। नए स्कूल में तोत्तो–चान को अपने मन के काम करने के अवसर मिलने लगे और न कोई रोक–टोक थी, न ही कोई शिकायत करने वाला। यही वजह थी कि वह पचास बच्चों वाले स्कूल में रमने लगी थी। स्कूल में संचालित क्रिया–कलापों की छाप उसके मन में इस कदर छाई रही कि आगे चलकर वह इस किताब के रूप में हमारे समक्ष आई।

मूल रूप से यह किताब जापानी भाषा में लिखी गई थी, बाद में इस पुस्तक की उपयोगिता और लोकप्रियता देखते हुए इसका अन्य भाषाओं में तर्जुमा हुआ। इस किताब को शैक्षिक जगत में इतना पसन्द किया गया कि यह जापान में बेस्ट सेलर बुक बन गई। इस किताब की खासियत है कि इसे हर उम्र समूह के लोगों द्वारा पढ़ा और पसन्द किया गया है।

इस पूरी किताब को कुछ हिस्सों में बाँटकर देखा जा सकता है जिसमें तोत्तो–चान का व्यक्तित्व, सजग शिक्षक, सिखाने के प्रति शिक्षक की मान्यता, बच्चों की आजादी, शिक्षण के तौर तरीके, प्रकृति के संरक्षण में शिक्षण, माँ की भूमिका, स्कूल का माहौल आदि उल्लेखनीय है।

तोत्तो–चान का व्यक्तित्व :

तोत्तो–चान को भी अन्य बच्चों की तरह चंचल और नटखट बच्ची के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह अपने आसपास घटने वाली घटनाओं का विश्लेषण करने में सक्षम है। इसके उदाहरण हमें तब देखने को मिलते हैं जब वह अपने नए स्कूल में आती है और यहाँ पर लगभग पचास बच्चे ही होते हैं, तब वह कहती है कि इतने बच्चे तो मेरे पुराने स्कूल में एक कक्षा में होते थे। दूसरा, जब उसे ट्रेन में सिक्का मिलता है तब कितने सारे तर्क –वितर्क लगाती है और अन्त में एक निर्णय पर पहुँचती है कि आखिर उसे करना क्या है।

एक सजग और आत्मीय शिक्षक : इस किताब में श्री सोसाकु कोबायाशी ने एक सजग और आत्मीय शिक्षक का बेहतरीन उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत किया है। जैसे पहले ही दिन तोत्तो–चान से उनका यह कहना कि अपने बारे में कुछ बताओ और उसे लगातार चार घण्टे तक बोलते हुए सुनना, ऐसे विरले उदाहरण ही हमें देखने को मिलते हैं। इस घटना से शिक्षक के व्यक्तित्व की यह बात तो साफ समझ में आती है कि वह बच्चे को कोरी स्लेट नहीं समझ रहे हैं और उनका विश्वास है कि बच्चे भी अपने साथ अपनी संस्कृति, अनुभव और परिवेशीय ज्ञान लेकर आते हैं और उन्हें भी अपनी बात बताने और अपने अनुभव साझा करने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए।

एनसीएफ–2005 भी इस बात की पैरवी करता है कि सीखने–सिखाने की यह प्रक्रिया एक पक्षीय न होकर दोनों की सहभागिता से होना चाहिए। ज्ञान निर्माण में दोनों पक्षों की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए। वर्तमान समय में देखें तो हम पाते हैं कि तमाम सरकारी या तथाकथित रूप से बड़े और महँगे स्कूल में दाखिले के समय स्कूल के शिक्षक ही प्रश्न करते हैं और बच्चों को उसका उत्तर देना होता है और इन्हीं उत्तरों के आधार पर यह तय होता है कि स्कूल में उसे प्रवेश मिलेगा या नहीं।

सीखने के प्रति शिक्षक की मान्यता और विश्वास :

"सभी बच्चे स्वभावतया अच्छे होते हैं, पर इस प्राकृतिक स्वभाव को बाहरी वातावरण और वयस्कों का दुष्प्रभाव बड़ी आसानी से नष्ट कर डालता है।" इस बात पर शिक्षक का अटूट विश्वास था। यहाँ पर बाहरी वातावरण से उनका आशय शायद उस नाटकीय स्वभाव से है, जो हम बच्चों से भूलवश करते रहते हैं। बच्चे उस स्थिति में ज्यादा बेहतर ढंग से सीखते हैं, जब वह उस प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल हों, जिसमें उनकी सारी इन्द्रियों के उपयोग करने की सम्भावना हो। सीखने के लिए आवश्यक सभी शर्त हमें नए स्कूल में देखने को मिलती है।

बच्चों को निर्णय लेने की आजादी :

पुस्तक इस बात को स्थापित करने में सफल होती है कि बच्चों को अपने निर्णय लेने का अधिकार और आजादी होनी चाहिए। तोमोए स्कूल में बच्चों को कौन–सा काम करना है, कब करना है, इस बात की पूरी आजादी थी। हर बच्चा अपनी पसन्द और रुचि से अपना काम करते। यहाँ पर शिक्षक एक सहायक की भूमिका में रहकर किसी भी बच्चे पर काम के लिए दवाब नहीं बनाता, बल्कि सीखने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ निर्मित करता, जिससे बच्चे सहज वातावरण में सीखने के लिए उत्सुक हो सकें।

हर बच्चा सीख सकता है :

हर बच्चा सीख सकता है, इस बात पर शिक्षक का विश्वास है। इसी कारण तोमोए स्कूल में बच्चे पर जल्दी सीखने का कोई दबाव नहीं बनाया जाता था। तोमोए स्कूल प्रतिस्पर्धा मुक्त विचार को प्रतिस्थापित करने का प्रयास भी है। जबकि आज के समय में हर जगह प्रतिस्पर्धा है। स्कूल में पहले दिन से ही बच्चों पर सबसे आगे निकलने के लिए जोर देना शुरू हो जाता है और बच्चा भी धीरे–धीरे यह समझने लगता है कि उसे सबसे आगे निकलना है और वह भी इस अंधी दौड़ में शामिल

हो जाता है। बच्चों पर यह दबाव अभिभावकों और समाज से लगातार बनाया जाता रहता है। इस कारण से बच्चों का सहज रूप से सीखना कहीं खो जाता है और फिर सीखना एक यांत्रिक प्रक्रिया बनकर रह जाती है।

शिक्षक का यह कहना कि "तुम सच में एक अच्छी बच्ची हो", इस बात ने तोत्तो–चान के मन में एक उत्साह और उमंग पैदा की जिससे वह अपना काम बेहतर तरीके से कर सकें। किन्तु आमतौर पर स्कूलों में बच्चों के सामने शिक्षक यह बात करते रहते हैं कि इन बच्चों को तो कुछ नहीं आता, ये तो चुपचाप बैठे रहते हैं ये बच्चे तो कभी–कभी स्कूल आते हैं इस कारण पीछे हैं । शिक्षकों का यह मानना होता है कि कुछ बच्चे जो अच्छे परिवारों से आते हैं वह तो जल्द सीखने वाले होते हैं और कुछ बच्चे जो वंचित परिवारों से आते है वह देर से सीखते है या कभीदृकभी तो सीख भी नहीं पाते।

शिक्षण विधियाँ (विषयों की दीवारों से परे) :

शिक्षा में नवाचारों के लिए प्रेरित करने वाली यह पुस्तक स्कूल में विषयों की दीवारों को तोड़ने की वकालत करती है। "शिक्षिका दिन भर में जिन विषयों को पढ़ाना होता था जिन प्रश्नों के उत्तर लिखने होते थे, उनकी सूची बना देती थी और तब बच्चों से कहती कि अब तुम्हें जहाँ से शुरू करना हो करो।" यहाँ पर सिर्फ शिक्षक ही निर्णय लेने की भूमिका में नहीं होते हैं। बच्चों को उनकी प्राथमिकता के आधार पर काम करने की स्वतंत्रता थी। शिक्षकों द्वारा बच्चों को बच्चा न मानकर उसे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व मानकर व्यवहार किया जाता। बच्चे की बात, उसके निर्णय का पूरा सम्मान किया जाता था।

इसके अतिरिक्त शिक्षण के दौरान शिक्षक इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि बच्चे क्या कर रहे हैं और यदि किसी अवधारणा को समझने में मुश्किल आ रही है तो बच्चे से बात करके उसका समाधान किया जाता। वर्तमान स्कूल व्यवस्था को देखे तो शिक्षक ही यह तय कर लेते हैं कि बच्चों को क्या करना है, कैसे करना है, कब तक करना है और यहाँ तक कि बच्चों को कहाँ मुश्किल आएगी और उसका समाधान भी कैसे करना है। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चा सिर्फ शिक्षक द्वारा तय किए गए निर्णयों या आदेशों का पालन करने वाला ही बनकर रह जाता है। वैसे भी हमारे भारतीय समाज में जो बच्चा बिना किसी विरोध के बड़ों का कहना मान लेता है वह तथाकथित रूप से एक अच्छा बच्चा या इंसान माना जाता है। हमारी भाषा की किताबें भी इस तरह के बहुतेरे उदाहरणों से पटी पड़ी हैं।

प्रकृति के साथ रिश्ता (कक्षा से बाहर भी ज्ञान) :

पुस्तक में शिक्षण की प्रक्रियाओं को प्रकृ ति की गोद में कैसे संचालित किया जाए, इसका अनुभव किया जा सकता है। एन.सी.एफ. 2005 भी इस बात को जोर देकर कहता है कि ज्ञान को बाहरी दुनिया से जोड़ा जाए। यह सिर्फ कक्षा की चारदीवारी तक ही सिमट कर न रह जाए। उदाहरण के लिए विज्ञान से सम्बंधित अवधारणा फूल खिलते कैसे हैं इसको सिर्फ कक्षा में ही बैठकर बोर्ड पर चित्र बनाकर या किताब से पढ़ाने के बजाय बच्चों को बाग में ले जाकर समझाना। इससे इस बात को बल मिलता है कि बच्चे जब स्वयं से किसी प्रक्रिया में शामिल होते है तो वह अवधारणा को ज्यादा अच्छे से समझ पाते हैं। इसलिए तोमोए इस बात के पक्ष में था कि "जितना बच्चों का पठन–पाठन पूर्णतया उन्मुक्त वातावरण में हो उतना ही बेहतर है।"

प्रोत्साहन से दूर :

इस स्कूल द्वारा कभी भी अपने कामों का प्रचार–प्रसार नहीं किया गया। वह बिना किसी प्रोत्साहन के अपना काम स्वप्रेरणा से किए जा रहे थे। इसका कारण था कि वे यह सब दिखावे के लिए नहीं वरन अपनी खुशी के लिए कर रहे थे। लेकिन आज के समय में तो स्कूल के अच्छे व खराब प्रदर्शन को मीडिया के माध्यम से सभी के सामने लाया जाता है। कभी–कभी तो उस स्कूल के शिक्षकों की वेतन वृद्धि भी रोक दी जाती है। किन्तु असल में जो प्रयास करने चाहिए,वह कहीं पीछे रह जाते हैं।

पहले स्कूल के बारे में याद नहीं : इस किताब में तोत्तो–चान ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि उसे अपने पहले स्कूल के बारे में कुछ याद नहीं है। यदि इस बात का विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि शायद वहाँ ऐसा कुछ हो ही नहीं रहा था जो उसे रोचक लगे जिसमें उसे मजा आता और वह उस प्रक्रिया में शामिल हो पाती। शायद एक पारम्परिक स्कूल जिस ढंग से संचालित होता है, वैसा ही रहा होगा वह स्कूल, जहाँ पर शिक्षकों और बच्चों में संवाद शून्यता पसरी रहती है। यदि ऐसा नहीं होता तो शिक्षिका इस बात को जानने का प्रयास अवश्य करती कि तोत्तो–चान इस तरह का व्यवहार क्यों कर रही है। मगर उन्होंने उसकी चंचल, नटखट और बाल सुलभ चेष्टाओं को न समझते हुए उस पर स्कूल से निकाल दिए जाने का एक ठप्पा लगा दिया।

माँ की भूमिका :

अपनी बेटी को उसके पहले स्कूल से निकाल दिए जाने पर माँ काफी चिन्तित हो जाती है। मगर वह इस बात को उसे नहीं बताती है क्योंकि उन्हें यह लगता है कि अभी वह बहुत छोटी है। इसी कारण नए स्कूल में जाते समय वह काफी आशंकित रहती है। आज के समय में बच्चों पर माँ–पिता द्वारा काफी दबाव बनाया जाता है और यदि बच्चे किन्हीं कारणों से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए तो बच्चे हतोत्साहित हो जाते हैं।

जानवरों से जुड़ाव :

बच्चों को जानवरों से प्रेम होता है। तोत्तो–चान को भी अपने कुत्ते से काफी लगाव था। वह उसके साथ वैसा ही व्यवहार करती जैसे इंसानों के साथ

किया जाता है। जैसे स्कूल से आने के बाद उसको सारी बातें बताना या माँ का यह कहने पर कि वह गुम हो गया है तो तोत्तो–चान यह सोचती है कि कही माँ ने उसे कुछ ऐसी बात तो नहीं कह दी जो उसे बुरी लगी हो और वह घर छोड़ कर चला गया। इस तरह के उदाहरण हमें आम जीवन में भी देखने को मिलते है जब बच्चे उनके गुड्डा–गुड़िया से बात करते है उनको खाना खिलाते हैं या उनको पढ़ाते हैं।

स्कूल का वातावरण :

"कितना रोचक था वहाँ पर पढ़ने का तरीका। शायद यही वजह थी कि बच्चे कभी भी स्कूल से नागा नहीं करते थे और हर दिन स्कूल आने के लिए लालायित रहते थे।" यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि यदि स्कूल में चल रही गतिविधियों में बच्चों को मजा आ रहा है और जो पढ़ाया जा रहा है वह उन्हें समझ में आ रहा है तो उन्हें स्कूल में मजा आने लगेगा। शिक्षक यदि बच्चों से प्रेम से बात करते हैं तो वह स्कूल आने के लिए उत्सुक रहेंगे अन्यथा आजकल सरकारी स्कूल में ड्राप आउट एक बड़ी समस्या है और इसके कारणों में बच्चों की गरीबी और उनका अन्य कार्यो में शामिल होना बताया जाता है। इस पर हमें गम्भीरता से सोचने की जरूरत है।

बच्चों का सर्वांगीण विकास :

तोमोए स्कूल में शिक्षक बच्चों के भोजन को लेकर भी फिक्रमंद थे अर्थात वे यह चाहते थे कि बच्चे संतुलित भोजन लें और अपनी दैनिक भोजन में कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से शामिल करें। इस बात को वह बहुत ही सरल भाषा में बच्चों को समझा पाए। यहाँ पर एक सजग शिक्षक की भूमिका साफ दिखाई देती है कि वह सिर्फ विषयों का ज्ञान देकर ही अपनी जिम्मेदारी से इतिश्री नहीं कर लेते हैं।

बच्चों पर विश्वास :

स्कूली समय के बाद बच्चों को किसी यात्रा पर ले जाना एक अचरज की बात है जबकि बच्चे कम उम्र के हों। मगर शिक्षक ने बिना किसी चिन्ता के

यह प्रयास किया और बच्चों को गर्म सोते की यात्रा पर ले गए। सामान्यता बच्चों के पिकनिक के सम्बन्ध में अक्सर आम शिक्षक काफी डरे नजर आते हैं कि कही बच्चे खो न जाएँ, उनको चोट न लग जाए, कहीं कुछ अनहोनी न हो जाए। इसी तरह पुस्तकालय में बच्चों पर विश्वास करना कि वे किताब पढ़ें और चाहें तो उन्हें घर भी ले जा सकते हैं। आमतौर पर पुस्तकालय की किताबें फटने और खराब होने के डर से अलमारियों में ही काफी सुरक्षित रखी रह जाती हैं और बच्चे इससे वंचित रह जाते हैं।

पुस्तक पर प्रतिक्रिया :

इस पुस्तक ने जापानी प्रकाशन इतिहास में एक रिकॉर्ड बनाया है। और इसको पसन्द करने वालों में सभी आयु वर्ग के लोग हैं। कुछ स्कूलों के शिक्षकों ने अपने स्कूल में इस तरह की शिक्षण विधियों को अपनाना भी शुरू किया है। "बाल अपराध बन्दीगृह से एक हाई स्कूल की छात्रा ने लिखा अगर मेरी माँ तोत्तो–चान की माँ जैसी होती और मेरे शिक्षक कोबोयाशी जैसे होते तो आज में वहाँ न होती जहाँ हूँ।" यह किसी महिला द्वारा लिखी बेस्ट सेलर किताब रही।

अन्त में :

यह कहा जा सकता है कि यह एक अनूठी पुस्तक है। शैक्षणिक पुस्तकों की लम्बी कतार में इस पुस्तक की विशिष्टता साफ दिखाई देती है। यह बच्चों, शिक्षक और शिक्षण प्रक्रियाओं आदि के बारे में गहरे व सूक्ष्म विचारों को अनुभव की जमीन पर भावनाओं और रचनात्मकता से जोड़ देती है। इसी वजह से ये विचार इस पुस्तक में आकर प्रभावी हो जाते हैं।

इस पुस्तक की दूसरी बड़ी विशेषता यह नजर आती है कि शिक्षा जगत में आज फैली निराशा के माहौल में यह उम्मीद की रोशनी दिखाती है। वैकल्पिक शिक्षा के विचारों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि ये विचार तो बहुत अच्छे हैं, मगर व्यावहारिक नहीं हैं। वहीं यह पुस्तक बताती है कि कैसे इन विचारों को अमली जामा पहनाया जा सकता है, अगर बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा पर भरोसा किया जाए और अपने दिमाग को पूरी तरह से खुला रखा जाए।

तीसरी विशेषता यह उभरती है कि शैली बहुत सरल है। बोझिल शब्दों से या किसी भी तरह की अलंकारिकता से बचा गया है। इससे पता चलता है कि सरल सहज प्रस्तुति कैसे दिल को छू लेती है।

इसे नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रकाशित किया है।

प्रेरणा मालवीय,
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
भोपाल

Source: https://tinyurl.com/y2pratjp

ड्राफ्ट एनईपी 2019 के कुछ प्रमुख बिंदु

नई शिक्षा नीति (एनईपी), 2019 के मसौदे ने एक नए "5 + 3 + 3 + 4 डिजाइन" में स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र के पुनर्गठन की सिफारिश की है।

यह शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति, 1968 की विरासत में एक प्रमुख बदलाव है, जो स्कूल शिक्षा प्रणाली में "10 + 2" प्रारूप का अनुसरण करता है।

पूर्व ISRO प्रमुख के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली NEP समिति की राय है कि "जबकि स्कूल शिक्षा की 10 + 2 प्रणाली ने पिछले 50 वर्षों में देश की जरूरतों को पूरा किया है – और स्कूली शिक्षा तंत्र को एक समान बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम बढाया है। साथ ही रोजगार से सम्बंधित आधुनिक समय और जरूरतों के साथ–साथ, संज्ञानात्मक विज्ञान में प्रगति और खोजों के साथ, यह भी स्पष्ट किया है कि शैक्षिक प्रणाली के लिए एक नई संरचना की आवश्यकता है।"

इस नीति में दी गई शिक्षा की दृष्टि से 21 वीं सदी में हमारे छात्रों को बेहतर तरीके से तैयार करने के लिए पुनर्संरचना का प्रस्ताव किया गया है।

देश के विभिन्न हिस्सों में 10 + 2 प्रणाली को ग्रेड/कक्षा 1–12 के रूप में संदर्भित किया गया है, 1–5 प्राथमिक चरण के साथ, कक्षा 6–8 उच्च प्राथमिक चरण, कक्षा 9–10 माध्यमिक चरण और कक्षा 11–12 उच्च माध्यमिक, पूर्व–विश्वविद्यालय, इंटरमीडिएट या जूनियर कॉलेज चरण। लेकिन अब "उच्च माध्यमिक" या "जूनियर कॉलेज" की धारणाओं को समाप्त कर दिया जाएगा। कक्षा 11 और 12 को माध्यमिक चरण का अभिन्न अंग माना जाएगा।

ड्राफ्ट में कहा गया है कि इस डिजाइन के, सभी चरणों में मुख्य ध्यान "भारतीय और स्थानीय परंपराओं को शामिल करने के साथ ही नैतिक तर्क, सामाजिक–भावनात्मक सीखने, मात्रात्मक और तार्किक तर्क, कम्प्यूटेशनल सोच और डिजिटल साक्षरता, वैज्ञानिक स्वभाव, भाषाओं और संचार कौशल, एक तरीके से जो विकास के लिए उपयुक्त है और पाठयक्रम/शैक्षणिक शैली जो प्रत्येक चरण के लिए जरुरी है"।

समिति ने "मॉड्यूलर बोर्ड परीक्षाओं की प्रणाली" की भी सिफारिश की है – प्रत्येक विषय में केवल मुख्य अवधारणाओं, सिद्धांतों, महत्वपूर्ण सोच और अन्य उच्च–क्रम के कौशल

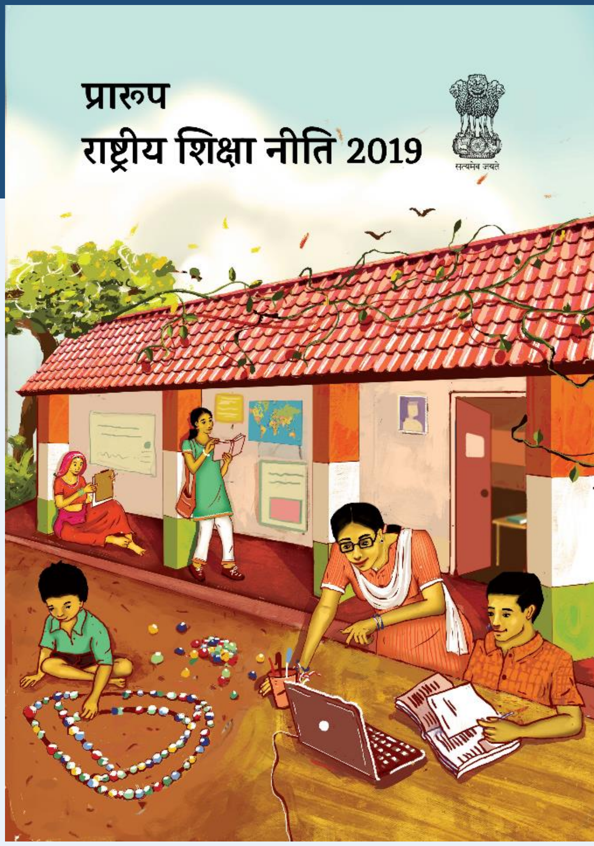

का परीक्षण करने का प्रस्ताव किया गया है, जो "सामान्य पाठ्यक्रमों को संजोयेगा एवं, शेष पाठ्यक्रम में लचीलेपन की पेशकश की जाएगी"।

मसौदा नीति में यह भी कहा गया है कि स्कूली शिक्षा की पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना को इस तरह से पुनर्गठित किया जाएगा, जो इसे 3–8 वर्ष, वर्ष, 8–11 वर्ष, 11–14 वर्ष और क्रमशः 14–18 वर्ष की आयु के अनुसार, अपने विकास के विभिन्न चरणों में शिक्षार्थियों की विकास संबंधी जरूरतों और हितों के लिए उत्तरदायी और प्रासंगिक बनाएगा। इसलिए स्कूली शिक्षा के लिए संरचना और रूपरेखा 5 + 3 + 3 + 4 डिजाइन द्वारा निर्देशित की जाएगी।

इसके तहत, पांच साल का फाउंडेशनल स्टेज होगा, जिसमें प्री–प्राइमरी स्कूल के तीन साल और ग्रेड 1 और 2 शामिल होंगे, इसके बाद तैयारी के तीन साल (या बाद वाले प्राइमरी) स्टेज – ग्रेड 3] 4 और 5 शामिल होंगे। फिर, तीन साल का मध्य (या उच्च प्राथमिक) चरण होगा – ग्रेड 6, 7 और 8 और अंत में, चार साल का उच्च (या माध्यमिक) चरण – ग्रेड 9, 10, 11 और 12।

मसौदे के अनुसार, "संवैधानिक चरण में पांच साल के लचीले, बहुस्तरीय, खेल–आधारित, गतिविधि–आधारित और खोज–आधारित शिक्षण शामिल होंगे, जो लगातार ईसीईसी (प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा) के साथ–साथ नवीनतम अनुसंधान पर आधारित होंगे साथ ही भारतीय परंपराएँ के अनुसार बच्चों के संज्ञानात्मक और भावनात्मक

विकास की गतिविधियाँ जो समय समय पर किये जाते रहे हैं।"

प्रारंभिक चरण, "तीन साल की शिक्षा, नाटक के निर्माण, खोज, और गतिविधि–आधारित शैक्षणिक और पाठ्यचर्या का आधार का निर्माण होगा, लेकिन धीरे–धीरे पाठ्यपुस्तकों के साथ–साथ अधिक औपचारिक कक्षा में सीखने के पहलुओं को भी शामिल करना शुरू हो जाएगा।"

समिति ने कहा है कि इस चरण के दौरान सामान्य तौर पर सामान्य शिक्षक होना चाहिए कुछ भाषा और कला के विशेषज्ञ शिक्षक भी होंगे (जो स्कूल या स्कूल परिसर में कार्य कर सकते है)।

इस चरण का उद्देश्य सामान्य विषयों को पढ़ना, लिखना, बोलना, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान, और गणित सहित विषयों पर आधारित होगा, ताकि छात्रों को विशेष विषयों और विषय के माध्यम से सीखने के क्षेत्रों में गहराई से तैयार करने के लिए तैयार किया जाए।

मध्य चरण में "तीन साल की शिक्षा शामिल होगी, प्रारंभिक चरण की अधिक औपचारिक शैक्षणिक और पाठ्यचर्या पर निर्माण, लेकिन प्रत्येक विषय में अधिक अमूर्त अवधारणाओं की सीखने/चर्चा के लिए विषय शिक्षक भी होंग। इस स्तर पर विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के लिए छात्र तैयार होंगे।"

इस पर भी ध्यान दिया जाएगा, "प्रत्येक विषय के भीतर अनुभवात्मक अधिगम, और विभिन्न विषयों के बीच संबंधों की खोज, अधिक विशिष्ट विषयों और विषय शिक्षकों की शुरूआत के बावजूद प्रोत्साहित और जोर दिया जाएगा।"

माध्यमिक चरण "में चार साल के बहु–विषयक अध्ययन शामिल होंगे, और यह मध्य–चरण के विषय–उन्मुख शैक्षणिक और पाठयक्रम के आधार पर होगा, लेकिन छात्र की पसंद के साथ अधिक गहराई, अधिक महत्वपूर्ण सोच, जीवन आकांक्षाओं पर अधिक ध्यान और अधिक लचीलापन होगा।"

विभिन्न चरणों में सेमेस्टर

NEP के मसौदे के अनुसार माध्यमिक चरण के प्रत्येक वर्ष को दो सेमेस्टर में विभाजित किया जाएगा, कुल आठ सेमेस्टर के लिए। प्रत्येक छात्र प्रत्येक सेमेस्टर में पांच से छह विषय लेगा।

"सभी के लिए कुछ आवश्यक सामान्य विषय होंगे, जबकि एक साथ वैकल्पिक पाठ्यक्रम (कला, व्यावसायिक विषयों और शारीरिक शिक्षा सहित) का चयन करने में एक लचीलापन होगा, ताकि सभी छात्र अपने व्यक्तिगत रुचियां और प्रतिभाएँ का विस्तार कर सकते हैं।"

ड्राफ्ट नीति में कहा गया है, "इंटरएक्टिव और मजेदार कक्षाओं, जहाँ रचनात्मक, सहयोगी और गहरी और अधिक अनुभवात्मक सीखने के लिए रचनात्मक गतिविधियों के साथ प्रश्नों को प्रोत्साहित किया जाता है।

बिनय पटनायक
टीम लीडर, आई0एस0ए,
एस0सी0ई0आर0टी0

The draft National Education Policy 2019 is now available at https://t.co/5GwA2pEUfV Comments and suggestions if any may be mailed to nep.edu@nic.in before 30th June 2019 @DrRPNishank @PMOIndia @HRDMinistry @ugc_india

Source: https://tinyurl.com/y6r38cb6

वर्ग–कक्ष में अवधारणा आधारित गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन

वर्ष 2018 में डायट नालन्दा द्वारा चण्डी प्रखण्ड के 50 विद्यालयों में अवधारणा आधारित गतिविधियों के माध्यम से ि”ाक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के लिए चयनित विद्यालयों के वर्ग 3, 5 व 8 के बच्चों का हिन्दी और गणित विषय में पूर्व परीक्षा का आंकड़ा अप्रैल 2018 में प्राप्त किया गया इसके लिए नालन्दा जिला में वर्ग 2, 4 एवं 7 की वार्षिक परीक्षा 2017 के प्र”न पत्रों का प्रयोग किया गया।

सत्र 2017–19 के प्रि”ाक्षुओं द्वारा तीन माह के नियमित विषयवार एवं वर्गवार अवधारणा आधारित गतिविधियों के माध्यम से ि”ाक्षण के अक्टूवर 2018 में नालन्दा जिला में अर्द्धवार्षिक परीक्षा के प्र”न–पत्रों का प्रयोग करते हुये पुनः आंकड़ा एकत्र किया गया। प्राप्त आंकड़े के वि”लेषण के लिये प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों के बिहार सरकार द्वारा निर्धारित निम्न पाँच श्रेणियों का प्रयोग किया गया।

Grade	A	B	C	D	E
Percentage	*More than 80%*	*60% - 80%*	*40% - 60%*	*33% - 40%*	*Below 33%*

प्राप्त आंकड़ों का ग्रेडवार वि”लेषण व ग्राफीय निरूपण इस प्रकार है –

1. 40 प्रति”ात *(Grade-D&E)* से कम उपलब्धि वाले छात्रों की संख्या में कमी दर्ज की गयी है।
2. *Grade-C (40% - 60%)* से कम उपलब्धता वाले छात्रों की संख्या में कमी आयी है। (कक्षा 5 के गणित विषय को छोड़कर)
3. *Grade-B (60% - 80%)* प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण–

   – कक्षा 3 में हिन्दी विषय में ग्रेड *B* प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हुयी है, परन्तु उसी कक्षा के छात्रों का गणित विषय में प्रद”ान कुछ कम है।

   – कक्षा 5 के छात्रों में हिन्दी व गणित विषय में *Grade-B* प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में कमी आयी है, जबकि कक्षा 8 के हिन्दी विषय में *Grade-B* प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में कमी आयी है तथा गणित विषय में *Grade-B* प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हुयी है।
4. प्रत्येक कक्षा में *Grade-A (80%* से अधिक*)* प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है (कक्षा 3 के गणित विषय को छोड़कर)

Class 3	Subject **Hindi**	Pre-Test	Post-Test
	Grade	Percentage	Percentage
	A	13.32	21.71
	B	34.13	42.18
	C	35.01	25.44
	D	8.2	6.4
	E	8.24	4.36

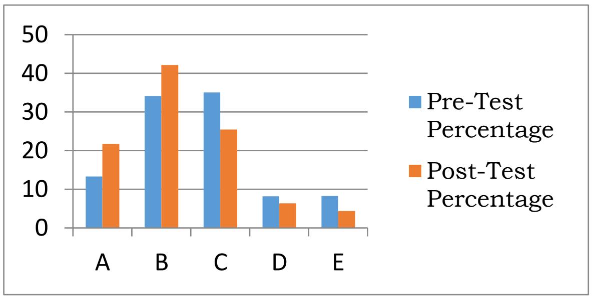

Class 3	Subject **Math**	Pre-Test	Post-Test
	Grade	Percentage	Percentage
	A	27.01	26.62
	B	49.82	43.04
	C	23.02	20.72
	D	5.65	4.96
	E	3.44	2.84

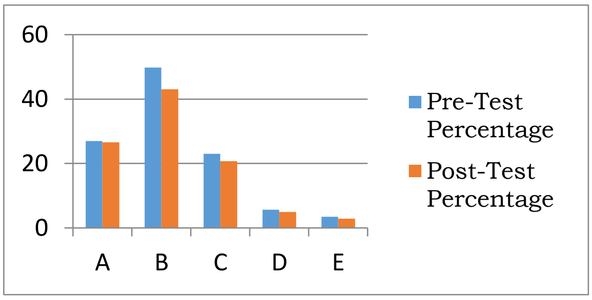

Class 5	Subject **Hindi**	Pre-Test	Post-Test
	Grade	Percentage	Percentage
	A	8.52	21.14
	B	44.2	43.78
	C	33.42	24.1
	D	8.54	6.42
	E	5.46	3.62

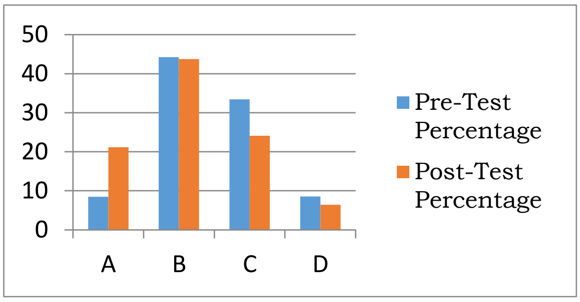

Class 5	Subject **Math**	Pre-Test	Post-Test
	Grade	Percentage	Percentage
	A	17.34	19.6
	B	40.66	39.84
	C	25.72	27.9
	D	10.04	7.76
	E	5.96	4.7

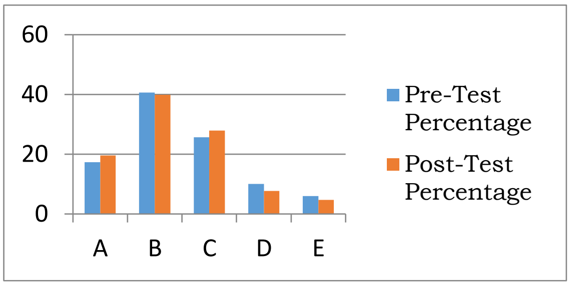

Class 8	Subject **Hindi**	Pre-Test	Post-Test
	Grade	Percentage	Percentage
	A	25.51	50.65
	B	45.89	39.02
	C	21.03	6.85
	D	2.71	1.14
	E	3.65	0

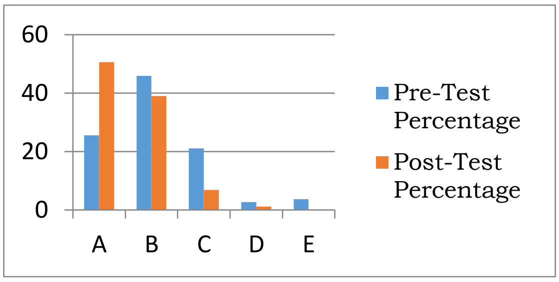

Class 8	Subject **Math**	Pre-Test	Post-Test
	Grade	Percentage	Percentage
	A	14.06	36.02
	B	32.98	39.31
	C	34.9	13.22
	D	11.23	6
	E	5.68	1.71

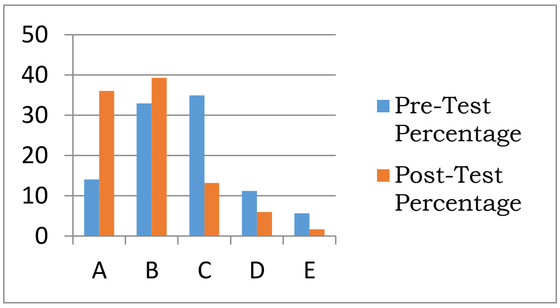

ग्राफिकीय चित्रण यह प्रदf"ित करता है कि हिन्दी विषय में f"क्षण अभ्यास गणित विषय की तुलना में अधिक प्रभावी है।

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वि"षतः गणित विषय में अधिगम प्रतिफल में सुधार हेतु अवधारणा मूलक गतिविधियों पर वर्ग–कक्ष में दैनिक f"क्षण अधिगम प्रक्रिया पर जोर देना होगा।

डा0 रश्मि प्रभा
– प्राचार्य, डायट नालंदा, बिहार

बाल संसद की सक्रियता से विकसित हुआ पुस्तकालय

समस्तीपुर जिला अंतर्गत उत्क्रमित मध्य विद्यालय मोरदीवा में वर्ष 2017 से विधिवत पुस्तकालय का संचालन हो रहा है। जहां विद्यालय की समय–तालिका के अनुसार वर्गवार बच्चे पुस्तकों व अखबारों का अध्ययन करते हैं। विद्यालय के इस पुस्तकालय को बाल संसद की सक्रियता से विकसित किया गया है।

बच्चों में पढ़ने की प्रवृति का विकास करने के उद्देश्य को लेकर बाल संसद के संयोजक शिक्षक गगन कुमार के नेतृत्व में बाल संसद के सदस्य शिवराज ध्वज, बबलू कुमार, कर्मवीर कुमार, विजय कुमार, रमण कुमार, सचिन कुमार व अन्य बच्चों ने मिलकर विद्यालय के एक कक्ष को पुस्तकालय कक्ष के रूप में व्यवस्थित किया। इसके बाद पुस्तकालय कक्ष का विधिवत उद्घाटन 20 नवंबर 2017 को अतिथियों द्वारा किया गया। विद्यालय के पुस्तकालय में अभी दो हजार से अधिक किताबों के अलावा काफी संख्या में बाल अखबार का संग्रह है। इसके अलावा विभिन्न समाचार–पत्रों में प्रकाशित प्रेरणादायी खबरों की कटिंग का भी संकलन है।

पेड़ पौधों की दुनियां

किया कलाप :

- भ्रमण द्वारा विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधों के अध्ययन
- आवश्यक उपकरण एवं सामग्रीः खुरपी/चाकू, एक झोला/बैग, गीला कपड़ा, अखबार, पेंन्सिल, कापी, धागा, ब्लेड, कैंची

हमारे आस–पास बाग, बगीचा और खेत है। जहां विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे है और छोटे से लेकर बड़े जन्तु है। हमारा आस पास अपने आप में जीव विज्ञान की प्रयोगशाला है। भ्रमण द्वारा पेड़ पौधों के तना, जड़े, पत्तियां, फूल, फल, बीज, तथा उसकी रचना एवं जमावट के बारे में अवलोकन एवं अनुभव करके जानकारी प्राप्त कर सकते है।

प्रकिया :

1 शिक्षक बच्चों के साथ आवश्यक उपकरण एवं सामग्रियों के साथ अपने आस–पास के बाग बगीचे, खेत में जाकर छोटे से लेकर बड़े पेड़ का अध्ययन करेंगें।

2 निम्न दिये गए सारणी के अनुसार पेड़ पौधों का अध्ययन कीजिए।

पेड़ पौधे का नाम	पेड़ पौधे की उंचाई	तना					शाखाएँ		पत्ती की जमावट	जड़	पेड़ पौधे का वर्ग
		रंग	कोमल	लता	मोटा	कठोर	तने के आधार से	तने के उपर से			
आम	ऊँचा				मोटा	कठोर		तने के उपर से	गुच्छा		वृक्ष

आपने क्या सीखा :

विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे होते है। कुछ पौधे छोटे होते है तथा उसका तना कोमल होता है,ऐसे पोधे शाकीय होते है। जिन पोधों में शाखाऐं तने के आधार से अधिक संख्या में निकलती है और जिनका तना पतला और कठोर होता है,उन्हें झाडी कहते है। जिन पौधों का तना सख्त, प्रायः भूरी छाल वाला और मोटा होता है और जिनकी शाखाएँ तने के उपरी भाग से निकलती है वृक्ष कहते है।

विस्तार : अपने आस पास तालाब के पास जाकर जल में उगने वाले पौधें को भी पहचाने।

तेजनारायण प्रसाद
विभागाध्यक्ष, गणित विज्ञान विभाग,
एस0सी0ई0आर0टी0

वीडियो देखने के लिए कृपया नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें या दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें

https://www.youtube.com/watch?v=ZnopNRz9XNk&t=1s

विश्व की महत्वपूर्ण तिथियां/दिवस

क्रम सं	तिथि	दिवस	विवरण
1	1 जून	विश्व दुग्ध दिवस	विश्व दूध दिवस 2001 से प्रत्येक वर्ष 1 जून को दुनिया भर में मनाया जाता है। यह दिन संयुक्त राष्ट्र (संयुक्त राष्ट्र) के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा स्थापित किया गया था ताकि लोगों को वैश्विक भोजन के रूप में दूध के महत्व को पहचानने में मदद मिल सके। यह दिवस डेयरी क्षेत्र के महत्व और इससे जुड़ी गतिविधियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। 1 जून को तारीख के रूप में चुना गया था क्योंकि कई देश पहले से ही उस वर्ष के समय में दूध दिवस मना रहे थे।
2	4 जून	मासूम बच्चों की अंतर्राष्ट्रीय पीड़ा का अंतर्राष्ट्रीय दिवस	इंटरनेशनल डे ऑफ इनोसेंट चाइल्ड विक्टिम्स ऑफ अग्रेसन को हर साल 4 जून को मनाया जाता है। यह दिन मूल रूप से 1982 के लेबनान युद्ध के पीड़ितों पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य दुनिया भर के उन बच्चों की पीड़ा को स्वीकार करना है जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक शोषण के शिकार हैं। यह दिन बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र के संकल्प और प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।
3	5 जून	विष्व पर्यावरण दिवस	पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता और कार्यों को प्रोत्साहित करके पर्यावरणीय जोखिमों से पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए हर साल 5 जून को मनाया जाता है। यह पहली बार 1974 में यूनाइटेड नेशन द्वारा आयोजित किया गया था, तब से, यह मानव आबादी से उभरते पर्यावरणीय जोखिमों से लड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है, समुद्री प्रदूषण, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग, टिकाऊ खपत तक। पूरे विश्व के 143 देशों ने सालाना अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। हर साल, एक नए विषय पर निर्णय लेता है और पर्यावरण से संबंधित मुद्दों की वकालत करने के लिए दुनिया भर के प्रमुख गैर सरकारी संगठनों, समुदायों, सरकारों और मशहूर हस्तियों से सक्रिय भागीदारी प्राप्त करता है।
4	8 जून	विश्व महासागरीय दिवस	विश्व महासागरीय दिवस की अवधारणा को मूल रूप से 1992 में कनाडा के इंटरनेशनल सेंटर फॉर ओशन डेवलपमेंट (ICOD) और ओशन इंस्टीट्यूट ऑफ कनाडा (OIC) द्वारा पृथ्वी शिखर सम्मेलन में प्रस्तावित किया गया था। यह दिन दुनिया भर में महासागरों की रक्षा और संरक्षण में मदद करने के लिए दुनिया भर में मनाया जाता है। यह न केवल महासागर को बल्कि उसके संसाधनों को भी संरक्षित करने के लिए व्यक्तिगत और समेकित कार्रवाई करने का अवसर प्रदान करता है। 2008 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 8 जून को " विश्व महासागरीय दिवस" के रूप में मान्यता देने के लिए आधिकारिक रूप से एक प्रस्ताव पारित किया।

5	12 जून	बाल–श्रम विरोधी दिवस	बाल–श्रम विरोधी दिवस हर साल 12 जून को मनाया जाता है। इस पहल को पहली बार वर्ष 2002 में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा किया गया था, जिसे संयुक्त राष्ट्र निकाय द्वारा विनियमित किया जाता है। स्कूल, युवा, महिला समूह और मीडिया सहित व्यक्तिगत सरकारें और ILO सामाजिक साझेदार, लगभग 1.2 मिलियन बच्चें जो काम करने के लिए अपने घरों और परिवारों से दूर रहते हैं, को अपना समर्थन देने के लिए एक साथ आते हैं।
6	14 जून	विश्व रक्तदाता दिवस	दुनिया भर के देश हर साल 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाते हैं। दिवस के पीछे का विचार रक्त, रक्त उत्पादों और सुरक्षित रक्त की आवश्यकता के लिए जागरूकता बढ़ाना है। इसके अलावा, यह रक्त दाताओं को धन्यवाद देने का एक कार्य है, जो स्वैच्छिक रूप से सामने आते हैं और जरूरतमंद लोगों को रक्त दान करते हैं। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व क्षय रोग दिवस, विश्व टीकाकरण सप्ताह, विश्व तंबाकू निषेध दिवस, विश्व मलेरिया दिवस, विश्व एड्स दिवस और विष्व हेपेटाइटिस दिवस के साथ शुरू किए गए आठ आधिकारिक वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों में से एक है।
7	20 जून	विश्व शरणार्थी दिवस	विश्व शरणार्थी दिवस हर साल 20 जून को मनाया जाता है।यह दिवस उन सभी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के साहस, शक्ति और दृढ़ संकल्प को चिह्नित करती है, जिन्हें संघर्ष और हिंसा की धमकी के तहत अपनी मातृभूमि से भागने के लिए मजबूर किया गया था। लोग इस दिन दुनिया भर के लाखों शरणार्थियों के साहस का सम्मान करते हैं। एमनेस्टी इंटरनेशनल और अंतर्राष्ट्रीय बचाव समिति (आईआरसी) जैसे संगठन दिन की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होता है।
8	21 जून	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	27 सितंबर 2014 को UNG में अपने भाषण के दौरान प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का विचार पहली बार रखा गया था।यह दिन, जिसे आमतौर पर योग दिवस के रूप में भी जाना जाता है, 2015 में अपनी स्थापना के बाद से 21 जून को मनाया जाता है। यह दिन शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास के महत्व को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है, जो पहले भारत में मूल रूप से प्रचलित था। संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून की तारीख का सुझाव दिया, क्योंकि यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन है और दुनिया के कई हिस्सों में विशेष महत्व रखता है। इसे यूएनजीए (संयुक्त राष्ट्र महासभा) द्वारा सर्वसम्मति से माना गया था।
9	26 जून	नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस	नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस 1989 में इसकी स्थापना के बाद से हर साल 26 जून को मनाया जाता है। यह विचार नशीली दवाओं के दुरुपयोग से मुक्त एक अंतर्राष्ट्रीय समाज के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्रवाई और सहयोग को मजबूत करने के लिए है।

संकलन : नलिन कुमार मिश्रा
आई0एस0ए0–एस0सी0ई0आर0टी0

अंग्रेजी सिखाएं

ICE-CREAM

I saw a dream
a tub of ice-cream
with too many cherries
and some strawberries
My hope was high
I went near to try
But before pack up
I just woke up.

SHAFAQUE FATMA
Primary school, Ahmadpur (Govt.)
Rafiganj, Aurangabad

आपके विचार

आपके अनुभव अमूल्य है। हम चाहते हैं कि आपसे सार्थक संवाद स्थापित हो। इस अंक में हम पुनः पिछले विषय ही आपके समक्ष रख रहे है। आपके विचार आलेख के रूप में अपेक्षित है।

1. शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे ?
2. कक्षा प्रबंधन और शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ

आप अपने संकुल, विद्यालय, बी0 आर0 सी0 में चर्चा भी कर सकते है। चर्चा का समेकन भी हमें प्रेषित कर सकते हैं।

आप अपने विचार अपने समूह के अलावे हमें भी भेज सकते हैं।

Website: www.biharscert.in

e-Mail - esamvaad.scert@gmail.com WhatsApp – +91 9973462621

Implementation Support Agency for SCERT, Bihar

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
महेन्द्रू, पटना, बिहार - 800006